वार्षिकी वर्ष : 2011 अंक - 5

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन इसरो isro

अभिव्यक्ति

हिंदी गृह पत्रिका

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और दृढ़ करती है ।

राजर्षि पुरुषोत्तम टंडन

डेकू DECU

विकास एवं शैक्षिक संचार यूनिट (डेकू)

SAC

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद

संसदीय राजभाषा समिति का दिनांक 29 सितम्बर, 2011 को संपन्न अंतरिक्ष उपयोग केंद्र का राजभाषा संबंधी निरीक्षण

संसदीय राजभाषा समिति के निरीक्षण के दौरान अंतरिक्ष उपयोग केंद्र/अं.वि. के क्रियाकलापों तथा हिंदी कार्यान्वयन संबंधित प्रर्दशनी का अवलोकन करते हुए संसदीय राजभाषा समिति के अध्यक्ष माननीय डॉ.प्रसन्न कुमार पाटसाणीजी

राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम की झलकियां

डॉ. रं.रा. नवलगुंद

निदेशक, सैक

संरक्षक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

मार्गदर्शन

श्री आर.के. दवे

नियंत्रक, सैक एवं सह अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादन मंडल

श्री बी.आर. राजपूत

श्री सी.एन. लाल

डॉ. मनीष कुमार पंड्या

श्री धर्मेश भट्ट

श्रीमती नीलू एस. सेठ

सुश्री रजनी सेमवाल

टंकण सहयोग

श्री जी.एल. त्रिवेदी

मुख पृष्ठ डिजाइन

डेकू

सितंबर 2010 से अगस्त 2011 के दौरान अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में राजभाषा कार्यान्वयन

- 01 सितंबर एवं 03 सितंबर 2010 को केंद्र के वरिष्ठ सहायक एवं सहायक स्तर के स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कुल 99 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया।
- केंद्र में गत तीन वर्षों से हिन्दी पखवाड़े के स्थान पर "हिन्दी माह" का आयोजन किया जा रहा है । इस वर्ष 14 सितंबर, 2011 से 13 अक्तूबर, 2011 तक केंद्र में "हिन्दी माह" आयोजित किया गया । हिन्दी माह के दौरान हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषा वर्ग के स्टाफ सदस्यों के लिए कुल 12 प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं । गत वर्ष 14 सितंबर, 2010 से 13 अक्तूबर, 2010 तक आयोजित "हिन्दी माह" की 12 प्रतियोगिताओं में हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषा वर्ग के कुल 1364 स्टाफ सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।
- केंद्र के वैज्ञानिकों के अथक प्रयत्नों से गत वर्ष केंद्र की वेबसाइट www.sac.isro.gov.in का हिन्दी संस्करण तैयार किया गया तथा 30 सितंबर, 2010 को हिन्दी माह के आयोजन के दौरान इसे इंटरनेट पर लांच किया गया । प्रति माह यह वेबसाइट केंद्र के नेटवर्क प्रभाग द्वारा अद्यतित की जाती है ।
- अं.वि. के निर्देशानुसार हिंदी माह के दौरान अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने हेतु लिए स्टाफ सदस्यों के लिए प्रोत्साहन योजना लागू की गई है जिसके अन्तर्गत 4 स्टाफ सदस्यों को पुरस्कृत किया गया ।
- नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2009-10 के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के सर्वोत्तम कार्यान्वयन के लिए अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो, अहमदाबाद को प्रथम स्थान प्रदान किया गया । इस उल्लेखनीय योगदान के लिए अंतरिक्ष उपयोग केंद्र को शील्ड एवं प्रमाण-पत्र तथा केंद्र के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी को भी प्रमाणपत्र प्रदान किया गया ।
- गत वर्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में केंद्र के निम्नलिखित स्टाफ को भी पुरस्कार प्राप्त हुएः

01	श्री सच्चिदानंद प्रथम पुरस्कार	हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता
02.	श्री संगीत कुमार मिश्र	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार

- 25 अक्तूबर 2010 से 1 नवंबर 2010 तक सतर्कता जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया । इस दौरान स्टाफ सदस्यों के लिए हिंदी में निबंध प्रतियोगिता, काव्यपाठ प्रतियोगिता एवं वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

- केंद्र के स्टाफ सदस्यों के लाभार्थ समय-समय पर विविध उपयोगी व्याख्यानों का आयोजन किया जाता है । 21 अक्तूबर 2010 के "आई केयर हॉस्पिटल" अहमदाबाद से डॉ. शशांक राठौड़ के द्वारा "संपूर्ण नेत्र सुरक्षा" विषय पर हिन्दी में व्याख्यान का आयोजन किया गया ।

- वर्ष 2009-10 के लिए केंद्र में स्टाफ सदस्यों के मूल टिप्पण एवं आलेखन हिंदी में करने एवं तकनीकी अनुभागों द्वारा अधिकतर कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना लागू की गई । मूल्यांकन समिति द्वारा इस योजना में भाग लेने वाले स्टाफ सदस्यों के कार्य का मूल्यांकन किया गया एवं स्टाफ सदस्यों के लिए लागू प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 7 स्टाफ सदस्यों एवं तकनीकी अनुभागों के लिए प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 4 तकनीकी अनुभागों को पुरस्कृत किया गया ।

- 14 दिसंबर, 2010 को प्रशासनिक क्षेत्र के सभी अधिकारियों के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें कुल 35 अधिकारियों ने भाग लिया ।

- 25 फरवरी 2011 को "ग्रहीय अन्वेषण को विशेष महत्व देते हुए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी एवं उपयोग" विषय पर तकनीकी हिन्दी सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें केंद्र के स्टाफ सदस्यों द्वारा 31 लेख प्रस्तुत किए गए थे, जिन्हें लेख संग्रह के रूप में प्रकाशित किया गया ।

- 03 मार्च, 2011 को गुजरात राज्य के दाहोद जिले के विद्यार्थियों के लिए "भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की झलकियाँ" नामक कार्यक्रम आयोजित किया गया । इस कार्यक्रम में दाहोद जिले के 24 स्कूलों के लगभग 100 विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने भाग लिया । इस कार्यक्रम के दौरान केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिकों द्वारा सुदूर संवेदन तथा सैटकॉम अनुप्रयोग विषय के बारे में छात्रों एवं शिक्षकों को जानकारी उपलब्ध कराई गई तथा उनके लिए एक अंतरिक्ष प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। छात्रों एवं शिक्षकों ने कार्यक्रम को अत्यंत उपयोगी बताया तथा इच्छा व्यक्त की कि भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यक्रमों के आयोजन किए जाए ।

- 10 जनवरी, 2011 को विश्व हिंदी दिवस मनाया गया, तथा इस अवसर पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई ।

- 25 जनवरी, 2011 को केंद्र के वरिष्ठ परियोजना सहायक, परियोजना वैयक्तिक सचिव एवं वरिष्ठ वैयक्तिक सचिव स्तर के स्टाफ सदस्यों के लिए हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 35 स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया ।

- 26 जनवरी, 2011 को हिंदी की विविध प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत पुरस्कृत प्रतिभागियों एवं अनुभागों को पुरस्कार एवं शील्ड प्रदान की गई ।

- सैक, पुस्तकालय की द्विभाषी वेबसाइट जारी की गई ।

- कम्प्यूटरों में फोनेटिक टाइपिंग हेतु सैकनेट पर गूगल हिंदी सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराया गया तथा विभिन्न कम्प्यूटरों पर व्यक्तिगत रूप से लोड किया गया ।

- 25 जुलाई, 2011 को केंद्र के वरिष्ठतम अधिकारियों -उप निदेशक, ग्रुप निदेशक एवं ग्रुप प्रधानों के लिए हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई । इसमें कुल 31 अधिकारियों ने भाग लिया ।

- कार्यालय में प्रतिवर्ष केंद्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है । गत वर्षों में इन प्रतियोगिताओं में अखिल भारतीय स्तर एवं हिन्दीतर भाषी क्षेत्र विशेष पुरस्कार के अंतर्गत केंद्र के कई स्टाफ सदस्यों को पुरस्कृत किया गया । गत वर्ष आयोजित तकनीकी लेख प्रतियोगिता के परिणाम निम्नानुसार हैं-

पुरस्कार का नाम	प्रतियोगी का नाम एवं पदनाम	लेख
अखिल भारतीय तृतीय पुरस्कार रुपए- 3001/- प्रतीक और प्रशस्ति पत्र	श्री शीलेष वैष्णव वैज्ञानिक / अभियंता एसजी"	"ब्रह्मांड-विगत, वर्तमान और भविष्य की संभावनाएं"
अखिल भारतीय हिन्दीतर भाषी पुरस्कार रुपए- 2501/- प्रतीक और प्रशस्ति पत्र	श्री जितेन्द्र खर्डे, कनिष्ठ अभियंता एवं श्री जी.जे. दोशी	"भारतीय समानव अंतरिक्ष अभियान"

	वैज्ञानिक / अभियंता एसई	

दिनांक 08 अगस्त, 2011 को केंद्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक श्री शीलेष वैष्णव ने डॉ. बी.के. चतुर्वेदी, सदस्य, योजना आयोग के करकमलों से ये पुरस्कार ग्रहण किए ।

- 25-26 अगस्त, 2011 को इसरो/अं.वि. के हिन्दी कर्मियों के लिए केंद्र द्वारा "राजभाषा अभिमुखीकरण कार्यक्रम" आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान राजभाषा विभाग के वरिष्ठ तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण जी द्वारा हिन्दी के प्रयोग के लिए उपलब्ध विभिन्न सॉफ्टवेयरों का प्रदर्शन किया गया एवं उनके बारे में प्रशिक्षण दिया गया । इस दौरान इसरो के विभिन्न हिन्दी कर्मियों द्वारा "हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में सूचना प्रौद्योगिकी का योगदान" विषय पर 11 लेख प्राप्त हुए जिनमें से 8 लेख कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत किए गए ।
- केंद्र में गत वर्ष सतर्कता जागरूकता अभियान आयोजित किया गया। इसके अंतर्गत दौरान हिन्दी निबंध, हिन्दी काव्यपाठ तथा हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई । केंद्रीय विद्यालय (सैक) के विद्यार्थियों के लिए भी अलग से हिन्दी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई ।
- संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा 14 जून, 2011 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के अधीनस्थ कार्यालय दिल्ली भू केंद्र का एवं 29 सितम्बर, 2011 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र का राजभाषा संबंधी निरीक्षण संपन्न किया गया ।
- चंद्रयान-1 से लिए गए "चंद्रमा के प्रतिबिंब" नामक मून एटलस हिन्दी में तैयार किया गया ।

<u>चुटकुला</u>

मोहन अपने दोस्त राकेश से कहता है, देखो दोस्त चूंकि हम लोकतंत्र प्रणाली पर विशवास रखते हैं इसलिए हम ने आपने घर मे सुख शान्ति बनाए रखने के लिए एक सिस्टम बनाया है ।
मेरी पत्नी वित्त मंत्री है। मेरी सास रक्षा मंत्री हैं। मेरे ससुर विदेश मंत्री हैं और साली लोक सम्पर्क मंत्री है।

राकेश: और आप शायद प्रधान मंत्री होंगे?

मोहन: नही यार, मै बेचारा तो जनता हूँ ।

कहानी

आ अब लौट चलें (देश की ओर)

विनोद एम.पटेल

पात्र परिचय : रामू काका , रामू चाचा- गाँव का दुकानदार
छाया – राजेश की बहन, रमा –राजेश की पत्नी, गुड़िया – गुड़िया

आज रक्षाबंधन का दिन था । सुबह से ही मुझे मेरी बहन छाया का फोन का इंतजार था । आज तक हर रक्षा बंधन की सुबह छाया के फोन की घंटी से ही मेरी नींद खुलती थी, लेकिन उसका फोन न आने से मैने ही फोन किया । तब पता चला की छाया बहुत दिन से भारत में बीमार है । आज मुझे जरा भी चैन नहीं था में हरपल छाया की फिकर करने लगा । मेरी परेशानी मेरी पत्नी रमा को समझने में जरा भी देर न लगी ।

रमा मुझे कहने लगी,

‘आप क्यों इतना परेशान हो ? चलो हम गाँव चलते हैं ।’

रमा गाँव जाना इतना आसान थोड़ी है । हम भारत में नहीं है न्यूजर्सी में हैं ।

वो तो मुझे भी पता है, लेकिन आपकी छोटी बहन अगर गाँव में बीमार है, और अपने बा और बापूजी इस दुनिया में नहीं है तो आप की जिम्मेदारी बनती है फिर आप उसका ख्याल रखें ।

रमा के उस वाक्य से मुझे बापूजी के अंतिम शब्द याद आए - ‘बेटा राजेश, अब इस दुनिया में तेरे अलावा, छाया का कोई नहीं है उसका ध्यान रखना’ ।

बस वो ही दिन में और रमा ने भारत आने की टिकिट का इंतजाम कर लिया । मैने छाया को अपने आने के विषय में कुछ बताया नहीं । लेकिन जब छाया के घर हम दोनों उसको देखने गए तो हमें देखते ही उसकी बीमारी ही भाग गई । गाँव में सब खुश हो गए । फिर भी मैं रामूकाका को ढूंढता था । में बहुत सालों के बाद अमेरिका से आया था इसलिए गाँव में बहुत कुछ बदल गया था, मैने देखा तो जहाँ रामूकाका की दुकान थी वहाँ बड़ा मकान बन

गया था । जब मैंने पूछा तो पता चला कि रामूकाका ने गाँव के पिछवाड़े एक छोटे-से पुराने मकान में दुकान चला रहे हैं । छाया ने मुझे कहा "तुझे राम काका के पास जाना है तो चल, मैं ले चलती हूँ ।"

हमारे साथ रमा भी चली, मैंने दूर से देखा तो एक झोंपड़े में एक बूढा खड़ा था, दूर से भी पता नहीं चलता था कि बूढे ने कपड़े पहने है हैंगर पर टाँगे हैं। जब मैं पास गया तब पता चला कि बूढा और कोई नहीं रामूकाका को देखकर कुछ न बोल सका, न तो रामूकाका ने मुझे पहचाना । मैंने रामूकाका को पूछा

'ये गुड़िया का क्या दाम है ? '
रामूकाका गुड़िया के ऊपर लगी धूल को साफ करते हुए बोले

'बेटे बहुत समय से पड़ी है बीस रुपए दे देना '

मैंने गुड़िया को जैसे हाथ में लिया तो रमा मेरे सामने देखकर नाक के टेंखे चढ़ा कर बोलने लगी

'अरे, राजेश घर में अब कौन छोटा है ये गुड़िया के साथ खेलने वाला ? क्या बहुत बेकार चीज घर में लाने की । '

छाया ने भी सुना लेकिन कुछ न बोली, लेकिन मेरी आँखों से टप-टप पानी निकलने लगा, मैंने कुछ भी बोले बिना जेब में से पाँच हजार रुपए निकाल कर रामूकाका के हाथ में रखा, वो कुछ भी समझ न सके, वो कहने लगे

'ये क्या है बेटा ? मेरे पास छूटे नहीं है, मेरा मज़ाक मत उड़ाओ ।
'रामूकाका मैं आपकी मजाक नहीं कर रहा हूँ ये ढींगली की कींमत चुका रहा हूँ'।
'मैं कुछ समझा नहीं बेटा'

रामूकाका में मगनभाई का लड़का हूँ । राजू ... कुछ याद आया'
'हाँ बेटा याद आया, तू तो बहुत बड़ा हो गया है' ।
हम दोनों की बात छाया और रामू को कुछ समझ नहीं आया । लेकिन रमा ने मुझे कहा राजेश तू बहुत गलत कर रहा है इस तरह फालतू चीजों के लिए पाँच हजार रुपए देना गलत बात है । मेरे मन की बात मैं कहना नहीं चाहता था लेकिन फिर मैनें सोचा अगर मैंने आज

रमा को सब नहीं बताया तो वो हर हमेंशा गलत ही सोचेगी, इसलिए मैंने रमा को कहा चलो रमा, हम घर जाकर बात करते हैं ।

मैंने दोनों हाथ से गुड़िया को पकड़ रखा था घर आकर अपने बैग में संभालकर रख दी, तो तुरंत रमा आकर बोलने लगी ।
'इतनी पुरानी गुड़िया को बेकार में क्यों रख रहे हो',
'रमा मेरी बात पहले तू सुन लें ।'

मैंने मेरी बचपन की पुरानी याद ताजा करते हुए रमा को कहने लगा
रमा, छाया तुम दोनों को ये रामूकाका की बात पता नहीं है.. आज मैं आपको जो कहने जा रहा हूँ वो जब मैं चार साल का था उस समय की बात है, रक्षाबंधन का दिन था, छाया तीन साल की थी और राखी बांध कर मुझे कहने लगी

भैया मुझे गुड़िया दिला दो आज राखी है मैं तो छाया का हाथ पकड़कर रामूकाका की दुकान में ले गया और बड़े रौब से रामूकाका से कहा
'रामूकाका मेरी बहन छाया को जो गुड़िया चाहिए वो दे दो '

रामूकाका ने दो तीन गुड़िया दिखाई, छाया को सबसे बड़ी गुड़िया पसंद आई और ले कर घर की ओर चलने लगी । रामूकाका ने मुझसे पूछा 'बेटा पैसा कहाँ है ?'

मैने जेब में हाथ डाला और जेब में खेलने के रॉबोट के सिक्के निकाल दिए, रामूकाका इस सिक्के में से थोड़े सिक्के मुझे वापस दिए और कहने लगे 'बेटा तूने मुझे ज्यादा दे दिए हैं ये वापस ले जाओ '

जब हम दोनों की बात गाँव का बनिया सुन रहा था तो बोला 'रामूकाका इस तरह धंधा करोगे को भीख माँगोगे इस खोटे सिक्के से भला कुछ मिलता है ? '

'कोई बात नहीं सेठ मुझे भी पता है कि सिक्का नकली है, लेकिन जब ये बच्चा बड़ा होगा तब पता चलेगा कि किसने मेरा गलत सिक्का चला लिया और जब मैं भी भगवान के दरबार में जाऊँगा और भगवान की प्रार्थना करूँगा कि हे प्रभु, तू मुझ जैसे गलत सिक्के को चला लेना'

मेरी ये बात सुनकर छाया और रमा दोनों की आँख में पानी आ गया और रमा मुझे कहने लगी ।

'राजेश अभी मुझे रामूकाका के पास वापस जाना है वो रामू काका नहीं, सच में राम है'।

हम तीनों की आंखों में पानी था । तीनों वापस रामू काका के पास गए तो रमा तो रामूकाका के पैर छूने लगी और आँखों में आंसू के साथ कहने लगी

'रामू काका आज तक कहानी में बहुत सुना था आज स्वयं भगवान का दर्शन किया'।

मुझे पता है रमा अमेरिका से आने से पहले वापस टिकट की बात हर बार करती थी लेकिन आज मुझे कहने लगी

"राजेश अपनी रिटर्न टिकट कैंन्सल करवा दो मुझे स्वार्थी अमेरिका से निः स्वार्थ रामू काका का गाँव बहुत अच्छा लगता है"

और आज मैं सच बताऊँ हमारे पास इतना सारा पैसा कमाया हुआ है कि हमने वापस जाना छोड़ दिया और रामू काका जैसे बड़ों के लिए वृद्धाश्रम बनाकर सेवा करने का विचार किया ।

आज चार साल बीत गए हम सब खुश हैं । हर साल विदेश से कोई न कोई इस वृद्धाश्रम में आता है ।

'आ अब लौट चले' अपने घर अपने देश इसलिए कहा जाता है, "धरती अपनी माता चाहे" जैसा भी है फिर भी अपना वतन अपना वतन ही है ।

चुटकुला

रेस्तरां मे कॉफी पीते हुए कमलेश ने धीमे से प्रेम को बताया, देखो, उधर कोने वाली कुर्सी पर बैठा वह आदमी बड़ी देर से मुझे घूर रहा है।

प्रेमः तो घूरने दो ना । प्रेम लापरवाही से बोला ।

कमलेशः मैं उसे जानता हूँ, वह कबाड़ी है और हमेशा बेकार की चीजों मे दिलचस्पी लेता है।

बहुत ही कीमती चीजें

जसोता एम. सुहंदा
वरिष्ठ सहायक

1.	देने की चीजें	दान, आशीर्वाद, प्रेम और क्षमा
2.	खाने की चीज	गम – क्रोध को शांत करना
3.	करने जैसे कर्म	निष्काम कर्म और नैमित्तिक कर्म
4.	लेने की चीजें	गुरु ज्ञान, दुखियों के आंसु और सतगुरु की शरण
5.	छुपाने की चीज	अपने आंसू
6.	नियंत्रण करने की चीजें	जुबान एवं इंद्रियों पर नियंत्रण
7.	बांटने की चीज	गुरु ज्ञान के हीरे-मोती
8.	जानने की चीज	तत्व ज्ञान
9.	बोलने की चीज	सच, पुरूष परमात्मा का वर्णन
10.	सीखने की चीज	जीने की कला (Art of living)
11.	पर्दा डालने की चीज	दूसरों के विकारों पर पर्दा

चुटकुले

एक आदमी पहलवान से- तुम मेरे तीस दांत तोड़ने की धमकी दे रहे हो। पूछ सकता हूं कि बाकी के दो दांतों पर इतना रहम क्यों?
पहलवान- त्योहार में सबको विशेष छूट दे रहा हूं।

संता- यार उत्तरपुस्तिका में क्या लिखूं?

बंता- यही कि इस शीट पर लिखे गए सारे उत्तर काल्पनिक हैं और इनका किसी भी किताब से कोई ताल्लुक नहीं है।

हिन्दी माह का आयोजन

संघ सरकार की राजभाषा नीति के क्रियान्वयन के एक भाग रूप में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र में 14 सितम्बर से 13 अक्तूबर, 2010 तक "हिन्दी माह" का आयोजन किया गया । दिनांक 14.09.2010 को "हिन्दी दिवस" मनाया गया । इसी दिन से हिन्दी माह 2010 प्रारंभ किया गया । कार्यक्रम का शुभारंभ सैक सांस्कृतिक परिषद के सदस्यों द्वारा प्रभु वंदना से किया गया । हिंदी माह समारोह का उद्घाटन श्री रवि सहाय सक्सेना (आईएएस), अपर मुख्य सचिव, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, गुजरात सरकार ने किया । डॉ.नमिता प्रियदर्शी, नियंत्रक, सैक ने सभी का स्वागत किया एवं अतिथि परिचय श्री राजेश खंडेलवाल, प्रबंधक, एनपीसीसी ने दिया। निदेशक एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अध्यक्षीय भाषण दिया । मुख्य अतिथि श्री रवि सहाय सक्सेना जी ने अपने संबोधन में सरल हिन्दी के प्रयोग पर बल दिया । अपने अनुभवों को साझा करते हुए उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर दुनिया के देश अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं और इसे अपना गौरव समझते हैं ।

सभा में स्वागत करती हुई केंद्र की नियंत्रक महोदया

दीप प्रज्वलन करते हुए मुख्य अतिथि व अध्यक्ष, राभाकास

हिन्दी माह के दौरान कुल 13 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । ये सभी प्रतियोगिताएं हिन्दी भाषा वर्ग तथा हिन्दीतर भाषा वर्ग के लिए अलग-अलग आयोजित की गईं । कर्मचारियों के आकर्षण का केंद्र रहीं मौखिक प्रतियोगिताएं-हिंदी काव्यपाठ, आशुभाषण तथा प्रश्नमंच ।

हिन्दी काव्यपाठ प्रतियोगिता का एक दृश्य

हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता का एक दृश्य

हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन ऑनलाइन किया गया । जिसमें प्रतिभागियों ने अपने बैठने के स्थान से ही कंप्यूटर द्वारा प्रतियोगिता में भाग लिया । ऑन लाइन प्रतियोगिता में प्रथम पाँच स्थान पर रहने वाले प्रतिभागियों को मौखिक प्रतियोगिता के दौरान विक्रम हॉल में मंच पर आमंत्रित किया गया । प्रतियोगिता के कई राउंड थे-इनमें सामान्य ज्ञान राउंड, दृश्य एवं श्रव्य राउंड बड़े आकर्षक एवं मनोरंजक थे । मुख्य प्रतिभागियों से पास होने वाले प्रश्नों के उत्तर हॉल में उपस्थित कर्मचारियों ने दिए तथा श्रोताओं से भी प्रश्न पूछे गए । इनके अतिरिक्त हिंदी में "लिखित प्रतियोगिताएं" थीं-हिंदी निबंध, हिंदी श्रुतलेखन, हिंदी टाइपिंग, हिंदी वर्ग पहेली, हिंदी अनुवाद, हिंदी शब्दज्ञान, हिंदी आशुलिपि, हिंदी सरल लेख, हिंदी टिप्पण व आलेखन एवं हिन्दी कहानी लेखन । हिंदी श्रुतलेखन, हिंदी टाइपिंग, हिंदी वर्ग पहेली, हिंदी अनुवाद, हिंदी शब्दज्ञान, हिंदी आशुलिपि, हिंदी सरल लेख, हिंदी टिप्पण व आलेखन एवं हिन्दी कहानी लेखन ।

<u>हिंदी माह के दौरान आयोजित लिखित प्रतियोगिताओं में भाग लेते हुए स्टाफ सदस्य</u>

हिन्दी काव्य पाठ तथा हिन्दी प्रश्नमंच प्रतियोगिता में श्रोताओं का उत्साह चरम सीमा पर था। श्रोताओं ने प्रतियोगियों का उत्साह बढ़ाया और स्वयं भी प्रतियोगिता में भाग लिया । लिखिति प्रतियोगिताओं में विशेषतया हिन्दी निबंध तथा कहानी लेखन में उच्च स्तरीय रचनाएं देखने को मिलीं । शब्दज्ञान, वर्ग पहेली अत्यंत रोचक रहीं।

हिन्दी माह के दौरान ही 30 सितंबर 2010 को निदेशक, सैक द्वारा केंद्र की इंटरनेट वेबसाइट **www.sac.isro.gov.in** का हिन्दी संस्करण रिलीज़ किया गया, जोकि तकनीकी क्षेत्र में हिन्दी की प्रगति का द्योतक है ।

30 सितंबर 2010 को सैक-वेबसाइट (www.sac.gov.in)
हिंदी संस्करण का उद्घाटन करते हुए निदेशक सैक

इसके अतिरिक्त हिन्दी माह के भाग रूप में पुस्तकालय द्वारा हिंदी पुस्तकों की प्रदर्शनी आयोजित की गई तथा संरक्षा समिति द्वारा <u>**प्रथम उपचार**</u> पर एक दिवसीय सेमिनार का भी आयोजन किया गया ।

हिन्दी माह के दौरान सैक पुस्तकालय में आयोजित हिन्दी प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए स्टाफ सदस्य

हिन्दी माह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणाम तथा पुरस्कारों का ब्यौरा निम्नानुसार है:

हिंदी भाषा वर्ग

क्र.सं.	नाम	प्रतियोगिता	पुरस्कार
1.	कृति खत्री	काव्यपाठ	प्रथम
2.	अरविन्द सहाय	काव्यपाठ	द्वितीय
3.	नीतू	काव्यपाठ	तृतीय
4.	जितेन्द्र कुमार	काव्यपाठ	प्रोत्साहन
5.	हेमन्त प्रकाश	काव्यपाठ	प्रोत्साहन
6.	संगीत कुमार मिश्र	निबंध	प्रथम
7.	दिनेश कुमार अग्रवाल	निबंध	द्वितीय
8.	अरूण भारद्वाज	निबंध	तृतीय
9.	आभा छाबड़ा	निबंध	प्रोत्साहन
10.	दिनेश कुमार	निबंध	प्रोत्साहन
11.	प्रणव कुमार पाण्डेय	श्रुतलेखन	प्रथम
12.	पुरूषोत्तम गुप्ता	श्रुतलेखन	द्वितीय
13.	भुवनेश्वर सेमवाल	श्रुतलेखन	तृतीय
14.	पायल शर्मा	श्रुतलेखन	प्रोत्साहन
15.	मनीष कुमार मित्तल	श्रुतलेखन	प्रोत्साहन
16.	रणधीर कुमार	टिप्पण व आलेखन	प्रथम
17.	संगीत कुमार मिश्र	टिप्पण व आलेखन	द्वितीय
18.	एसव्यास .पी.	टिप्पण व आलेखन	तृतीय
19.	दिनेश कुमार	टिप्पण व आलेखन	प्रोत्साहन
20.	दिनेश कुमार अग्रवाल	टिप्पण व आलेखन	प्रोत्साहन
21.	श्वेता अग्रवाल	कहानी लेखन	प्रथम
22.	अभिषेक कुणाल	कहानी लेखन	द्वितीय
23.	पायल शर्मा	कहानी लेखन	तृतीय
24.	अभय जैन	कहानी लेखन	प्रोत्साहन
25.	मनीष मित्तल	कहानी लेखन	प्रोत्साहन
26.	रंजन परनामी	वर्ग पहेली	प्रथम
27.	सत्यप्रिय मित्तल	वर्ग पहेली	द्वितीय
28.	मुकेश कुमार मिश्र	वर्ग पहेली	तृतीय
29.	प्रवीण पाटीदार	वर्ग पहेली	प्रोत्साहन
30.	जितेन्द्र कुमार	वर्ग पहेली	प्रोत्साहन
31.	रणधीर कुमार	अनुवाद	प्रथम
32.	मुकेश कुमार मिश्र	अनुवाद	द्वितीय
33.	दिनेश कुमार अग्रवाल	अनुवाद	तृतीय
34.	कमलेश कुमार बराया	अनुवाद	प्रोत्साहन
35.	अरूण भारद्वाज	अनुवाद	प्रोत्साहन
36.	मोहित आनंद	शब्दज्ञान	प्रथम
37.	अभय जैन	शब्दज्ञान	द्वितीय
38.	सत्यप्रिय मित्तल	शब्दज्ञान	तृतीय
39.	भुवनेश्वर सेमवाल	शब्दज्ञान	प्रोत्साहन
40.	मुकेश कुमार मिश्र	शब्दज्ञान	प्रोत्साहन
41.	आभा छाबड़ा	आशुभाषण	प्रथम
42.	एसव्यास.पी.	आशुभाषण	द्वितीय
43.	निष्काम जैन	आशुभाषण	तृतीय
44.	दीपक मिश्रा	आशुभाषण	प्रोत्साहन
45.	कमलेश कुमार बराया	आशुभाषण	प्रोत्साहन

हिंदीतर भाषा वर्ग			
क्र.सं.	नाम (डॉ./श्री/श्रीमती/सुश्री)	प्रतियोगिता	पुरस्कार
1.	देवांग मांकड़	काव्यपाठ	प्रथम
2.	कार्तिक भालसोड़	काव्यपाठ	द्वितीय
3.	आशीष सोनी	काव्यपाठ	तृतीय
4.	जितेन्द्र संघार	काव्यपाठ	प्रोत्साहन
5.	चंपा ठक्कर	काव्यपाठ	प्रोत्साहन
6.	दिलीपकुमार सी महेता	निबंध	प्रथम
7.	अमिय विश्वास	निबंध	द्वितीय
8.	बीशर्मा .एन.	निबंध	तृतीय
9.	संजय आरपंचाल .	निबंध	प्रोत्साहन
10.	मनीष वीपंड्या .	निबंध	प्रोत्साहन
11.	प्रतीक एजैन .	श्रुतलेखन	प्रथम
12.	अर्चना दीपक भट्ट	श्रुतलेखन	द्वितीय
13.	मनीष वीपंड्या .	श्रुतलेखन	तृतीय
14.	क्षितिज पंड्या	श्रुतलेखन	प्रोत्साहन
15.	उष्मा जयंतकुमार सारडा	श्रुतलेखन	प्रोत्साहन
16.	बीशर्मा .एन.	टिप्पण व आलेखन	प्रथम
17.	मनीष वीपंड्या .	टिप्पण व आलेखन	द्वितीय
18.	जितेन्द्र कुमार संघार	टिप्पण व आलेखन	तृतीय
19.	अमिय विश्वास	टिप्पण व आलेखन	प्रोत्साहन
20.	अपूर्व बीप्रजापति .	टिप्पण व आलेखन	प्रोत्साहन
21.	बी.एन. शर्मा	कहानी लेखन	प्रथम
22.	विनोदचंद्र एमपटेल .	कहानी लेखन	द्वितीय
23.	दिलीपकुमार सीमहेता .	कहानी लेखन	तृतीय
24.	अपूर्व बीप्रजापति .	कहानी लेखन	प्रोत्साहन
25.	जितेन्द्र कुमार संघार	कहानी लेखन	प्रोत्साहन
26.	दिलीपकुमार सीमहेता .	वर्ग पहेली	प्रथम
27.	बीशर्मा .एन.	वर्ग पहेली	द्वितीय
28.	प्रतीक एजैन .	वर्ग पहेली	तृतीय
29.	देवांग मांकड़	वर्ग पहेली	प्रोत्साहन
30.	अमिय विश्वास	वर्ग पहेली	प्रोत्साहन
31.	प्रतीक एजैन .	अनुवाद	प्रथम
32.	बीशर्मा .एन.	अनुवाद	द्वितीय
33.	देवांग मांकड़	अनुवाद	तृतीय
34.	जितेन्द्र कुमार संघार	अनुवाद	प्रोत्साहन
35.	अमिय विश्वास	अनुवाद	प्रोत्साहन
36.	बीशर्मा .एन.	शब्दज्ञान	प्रथम
37.	ऋचा चक्रवर्ती	शब्दज्ञान	द्वितीय
38.	अमिय विश्वास	शब्दज्ञान	तृतीय
39.	सुचन्द्रा भौमिक	शब्दज्ञान	प्रोत्साहन
40.	अर्चना दीपक भट्ट	शब्दज्ञान	प्रोत्साहन
41.	आनंद पाठक	आशुभाषण	प्रथम
42.	आशीष सोनी	आशुभाषण	द्वितीय
43.	संजय आर. पंचाल	आशुभाषण	तृतीय
44.	अंजना मजीठिया	आशुभाषण	प्रोत्साहन
45.	हेमल भगत	आशुभाषण	प्रोत्साहन

प्रश्नमंच, सरल लेख, आशुलिपि एवं टंकण प्रतियोगिताओं के परिणाम

क्र.सं.	नाम (डॉ./श्री/श्रीमती/सुश्री)	प्रतियोगिता	पुरस्कार
1.	घनश्याम जे. दोशी	प्रश्नमंच	प्रथम
2.	एच आर सिंह.	प्रश्नमंच	द्वितीय
3.	तुषार वी. गज्जर	प्रश्नमंच	तृतीय
4.	पिनाकिन पी. ठाकर	प्रश्नमंच	चतुर्थ
5.	हेमंत अरोरा	प्रश्नमंच	चतुर्थ
6.	एस. विनयकुमार	प्रश्नमंच	प्रोत्साहन
7.	संजय कसोदनिया	प्रश्नमंच	प्रोत्साहन
8.	वी. आर. टांक	प्रश्नमंच	प्रोत्साहन
9.	अभिषेक कक्कड़	प्रश्नमंच	प्रोत्साहन

10.	के. जे. कंसारा	सरल लेख	प्रथम
11.	एम. के. वाघेला	सरल लेख	द्वितीय
12.	डी. वी. पटेल	सरल लेख	तृतीय
13.	वी. एन. वाघेला	सरल लेख	प्रोत्साहन
14.	एन.आर. श्रीमाली	सरल लेख	प्रोत्साहन
15.	जे.एच. पटेल	सरल लेख (वाहन चालक)	प्रथम
16.	मनोहर एम. चावडा	सरल लेख(वाहन चालक)	द्वितीय
17.	जे.एस. देसाई	सरल लेख(वाहन चालक)	तृतीय
18.	वी. एम. ठक्कर	सरल लेख(वाहन चालक)	प्रोत्साहन
19.	दीपक एन. परमार	सरल लेख(वाहन चालक)	प्रोत्साहन
20.	पंकज परमार	आशुलिपि	प्रथम
21.	रेवती कन्नन अयंगर	आशुलिपि	प्रोत्साहन
22.	वेद प्रकाश	टंकण	प्रथम
23.	आर.एन. जोशी	टंकण	द्वितीय
24.	शौनक आई. भट्ट	टंकण	तृतीय
25.	दिनेश कुमार	टंकण	प्रोत्साहन
26.	रेवती कन्नन अयंगर	टंकण	प्रोत्साहन

<u>पुरस्कार वितरण समारोह :</u>

पुरस्कार वितरण समारोह में विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित करते हुए निदेशक महोदय एवं नियंत्रक महोदया

दिनांक 14.10.10 को पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया । केंद्र के निदेशक डॉ. रं.रा. नवलगुंद तथा नियंत्रक डॉ. नमिता प्रियदर्शी ने हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रमाणपत्र प्रदान किए । हिन्दी माह के दौरान आयोजित विभिन्न 13 प्रतियोगिताओं में कुल 1364 कर्मचारियों ने भाग लिया तथा 116 कर्मचारियों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया । केंद्र के निदेशक डॉ. रं.रा. नवलगुंद तथा नियंत्रक डॉ. नमिता प्रियदर्शी ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी तथा सभी से सरकारी कामकाज में हिन्दी में कार्य करने का आग्रह किया ।

सभी 13 प्रतियोगिताओं की आयोजन समिति के अध्यक्षों ने प्रतियोगिताओं की समीक्षा की और प्रतिभागियों की सराहना करते हुए रचनात्मक सुझाव रखे । केंद्र के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी श्री बी.आर. राजपूत के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी माह समारोह संपन्न हुआ ।

<u>चुटकुले</u>

संता: अगर मैं नारियल के पेड़ पर चढ़ जाऊं तो इंजीनियरिंग कॉलेज की लड़कियां दिख जाएंगी।

बंता: हां फिर चढ़ कर पेड़ छोड़ देना, तो फिर मेडिकल कॉलेज की भी दिख जाएंगी।

***

रामू (डॉक्टर से)- डॉक्टर साहब! ये फूलों की माला किस के लिए है ?

डॉक्टर (रामू से)- ये मेरा पहला ऑपरेशन है, सफल हुआ तो मेरे लिए, नहीं तो तुम्हारे लिए ।

***

एक मनचला लड़का एक लड़की का पीछा कर रहा था। लड़की को छेड़ने के लिए उसे रोक कर कहा- मैडम, आपकी घड़ी में कितना बजा है ?

लड़की ने गुस्से में आकर अपनी चप्पल उतारी और उसकी पीठ पर एक जमाते हुए कहा- एक बजा है।

एक राहगीर ने जब यह देखा तो लड़के को कहा कि अच्छा हुआ जो समय अभी पूछा, अगर एक घंटा पहले पूछते तो तुम्हें मज़ा आ जाता।

बात में बात

जसोता एम. सुहंदा
वरिष्ठ सहायक

बहुत ही समय पहले गुरु नानक साहब के समय की बात है ।

गुरु नानक साहब उसके दो शिष्यों लहणा (अंगद) और बाबा बुड्ढा के साथ गाँव-गाँव में घूम कर सत् का, ज्ञान का प्रचार करने के लिए निकले ।

घूमते-घूमते गुरु नानक साहब जी किसी गांव में अपने शिष्यों के साथ पहुंचें । वहाँ उन्होंने (उस गांव में) देखा कि 4-5 लोग साथ में बैठे हैं जिनके पास शराब-कबाब, मांस-मदिरा थी और एक स्त्री भी पास में बैठी थी । उन्होंने गुरु नानक जी को देख कर न तो उठ कर नमस्कार किया न ही कुछ आदर सत्कार किया । मगर इन सबसे अप्रभावित गुरु नानक जी अपने दो शिष्यों के साथ उस गांव से वापस रवाना होने से पहले उनको आशीर्वाद दिया – “सदा ही सुखी रहना ! सदा यहीं रहना” !

गुरु नानक जी फिर किसी और गांव में पहुंचे तो उस गांव के लोगों ने गुरु नानक जी को गांव के मुखिया से मिलवाया । मुखिया ने उनको रहने के लिए कमरा दिया । तीनों के खाने का इंतजाम करवाया । सुबह को उठकर तीनों नहा-धोकर तैयार हो गए । सत्संग के लिए इंतजाम करवाया गया । सत्संग भी अच्छी तरह पूरा हुआ ।

बोलते हैं “पानी तो बहता भला – संत तो चलता भला”

गुरू नानक साहब ने चलने की तैयारी बताई । मुखिया ने उनको भोजन, वस्त्र, दान-दक्षिणा देकर, खाना खिला कर खुश कर दिया और उनके निकलने के समय आशीर्वाद मांगा और “फिर से पधारिए” कह कर उनको रवाना किया ।

गुरु नानक साहब के मुखारविन्द से निकला “सदा भटकते रहना”

चलते-चलते अंगद जी के मन में गुरु के लिए संकोच, शंका होने लगी कि आज गुरु जी ने क्या किया ? जिस गांव में श्राप देना था वहां पर आशीर्वाद देकर आए कि “हमेशा खुश रहना” और जहां इतना आदर-सत्कार हुआ वहां गुरु जी ने उनको श्राप दिया कि “भटकते रहना”

अंगद जी ने गुरु नानक जी से शंका का निवारण करने का आग्रह किया ।

गुरु नानक जी ने बताया "देखो बच्चे, जो लोग खराब संगत में बैठे हैं, जिनका आचरण खराब है, वो बाहर जाकर औरो को भी खराब करेंगे और जिन लोगों में आदर-भाव, भक्ति, सेवा भाव है वो बाहर निकलेंगे तो औरों को भी अच्छी शिक्षा देंगे" ।

ये होती है "बात में बात" याने गूढ रहस्य । शब्दों में न जाकर अंदर के भावों को समझना चाहिए ।

चुटकुले

पत्नी : सुना है, स्वर्ग में पति-पत्नी को अलग-अलग रखा जाता है?

बंता : इसलिए तो उसे स्वर्ग कहते हैं।

***

संता ने चैलेंज किया कि वह ताजमहल को अपने सिर पर उठाकर

दिल्ली जा सकता है। यह सुनकर हजारों लोग इकट्ठा हो गए।

संता बोला : बस इसे उठाकर मेरे सिर पर रख दो...!

***

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में डॉ. विक्रम ए. साराभाई की शरीर आकार की प्रतिमा का अनावरण

भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान कार्यक्रम के प्रारंभक एवं जनेता डॉ. विक्रम ए. साराभाई का जन्म 12 अगस्त, 1919 को भारत के गुजरात राज्य के अहमदाबाद शहर में हुआ । डॉ. विक्रम साराभाई महान व्यक्तित्व के धनी थे । आपकी प्रसिद्धि न केवल भारत में अपितु विदेशों तक फैली हुई है । कॉस्मिक किरणों एवं आण्विक शक्ति के क्षेत्र में आपके योगदान को सदैव सहारा जाता रहेगा । वैज्ञानिक क्षेत्र में भारत को महत्वपूर्ण स्थान तक पहुँचाने में डॉ. साराभाई का महत्वपूर्ण योगदान है ।

अंतरिक्ष उपयोग केंद्र डॉ. विक्रम ए. साराभाई द्वारा संस्थापित महत्वपूर्ण संस्थानों में से एक है। हाल ही में 12 अगस्त, 2011 को डॉ. विक्रम ए. साराभाई की 92वीं जन्म जयंती के अवसर पर सैक के न्यू ऑडिटोरियम के निकट डॉ. विक्रम ए. साराभाई की शरीर आकार की प्रतिमा का अनावरण डॉ. के. राधाकृष्णन्. अध्यक्ष एवं सचिव, अंतरिक्ष विभाग/इसरो द्वारा किया गया ।

12 अगस्त, 2011 सैक के इतिहास में एक यादगार दिवस रहेगा । इस अवसर पर डॉ. विक्रम ए. साराभाई की पत्नी सुश्री मृणालिनी साराभाई, उनके पुत्र श्री कार्तिकेय एवं उनका परिवार तथा पुत्री मल्लिका साराभाई भी उपस्थित थे । इसके अतिरिक्त अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के पूर्व निदेशक प्रो. पी.डी. भावसार एवं डॉ. जार्ज जोसेफ भी उपस्थित थे । सुबह से ही लगातार बारिश होने के बावजूद स्टाफ सदस्यों की बड़ी भीड़ इस समारोह में एकत्रित थी । डॉ. के. राधाकृष्णन्, प्रो. पी.डी. भावसार, डॉ. जार्ज जोसेफ एवं केंद्र के निदेशक, डॉ. रंगनाथ रा. नवलगुंद ने सभा को संबोधित किया तथा डॉ. विक्रम ए. साराभाई के महत्वपूर्ण योगदानों एवं अपने साथ बिताए गए यादगार पलों से सभी को अवगत काराया । डॉ. के. राधाकृष्णन्, अध्यक्ष एवं सचिव अं.वि./इसरो ने शाल उढ़ाकर सुश्री मृणालिनी साराभाई एवं प्रो. पी.डी. भावसार को सम्मानित किया । अंत में विक्रम साराभाई के परिवार तथा अन्य माहनुभावों ने डॉ. विक्रम ए. साराभाई की प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी ।

डॉ. विक्रम ए. साराभाई

(1919-1971)

सूर्य

मनोहर चावडा
लेखा प्रभाग

सूर्य ग्रह मंडल की उत्पत्ति पौने पाँच अरब वर्ष पहले हुई थी । अविरत धमाके से अलग-अलग हो गए थे । उन्हीं में से पृथ्वी भी एक है । सूर्य में सर्जन उत्सर्जन--विसर्जन होते ही रहते हैं । सूर्य का ग्रहमंडल सूर्य से छः करोड़ किलोमीटर के अंतर से लेकर छः अरब किलोमीटर तक फैला हुआ है । जिनमें सबसे नजदीक बुध ग्रह सूर्य से पाँच करोड़ अस्सी लाख कि.मी. के अंतर पर स्थित है । शुक्र ग्रह जो सूर्य से दस करोड अस्सी लाख कि.मी. के अंतर पर है । मंगल ग्रह बाईस करोड कि.मी. के अंतर पर आया है । शनि ग्रह पृथ्वी से एक अरब बयालीस करोड कि.मी. के अंतर पर है । प्रजापति ग्रह दो अरब छियासी करोड कि.मी. पर है । वरूण ग्रह (नेप्चुन) चार अरब कि.मी. के अंतर पर स्थित है । अंतिम यम ग्रह जो छह अरब कि.मी. के अंतर पर आया है ।

ये सूर्य में धमाके के कारण समयान्तराल से अलग हुए ग्रह है । सूर्य एक सेकन्ड में चालीस लाख टन हाइड्रोजन जलाता है । सूर्य खुद पूड़ी की तरह अंदर से खोखला है । सूर्य में जो धमाके होते रहते हैं वे पृथ्वी के अणुधमाके से भी ज्यादा ताकतवर हैं । हर ग्यारहवे साल सूर्य में बदलाव आता है । या तो ज्यादा गरम होता है या फिर थोडा सा ठंडा होता है । इसका कारण (1) वह खुद गोल पूड़ी के आकार का है । (2) बडे कद के सूर्य का व्यास 14 लाख कि.मी. है । हर ग्यारहवें साल सूर्य में दो या तीन लाख कि.मी. की ऊँची अग्नि ज्वालाएं भभक उठती है । तब वह 14,40,000 कि.मी. व्यास के गोले की सभी तरफ की कुल 6511104000000 (छः हजार पांचसो ग्यारह अरब + दस करोड चालीस लाख वर्ग कि.मी. जितनी विशाल सपाटी से छुटता है । 1440000 कि.मी. के व्यास के छोटे-छोटे केंद्र स्थान (आंशिक) आण्विक प्रक्रियाओं और उष्णता ऊर्जानुत्सर्जन होता है । सूर्य ऐसा फौलाद का, या खडक का अथवा छोटे पत्थर जैसा नहीं है । सूर्य तो वायु और द्रव्य का एक विशाल गोला है । पृथ्वी के वातावरण में नाइट्रोजन, ऑक्सिजन, कार्बन डाई-ओक्साइड, वाष्प, नमी, बादल वगैरह भारी वायु तत्वों से उत्पन्न भार दबाव प्रति वर्ग इंच पर 14 रतल जितना रहता है । उससे सूर्य के हजारो कि.मी. में वायु स्तर का भार दबाव ज्यादा ही होगा । ऊर्जा द्रव्य तो आकाश में प्रसारण ही होता है । ऊर्जा द्रव्य के अवकाश प्रसारण की वजह से तो जगमगाते तारापिंड चमकते दिखते हैं । पौने पांच अरब वर्ष पूर्व सूर्य के क्षेत्र का विस्तार 100000000000000 (एक लाख अरब) वर्ग कि.मी. जितना होगा । ब्रह्मांड में बडे ग्रह की

संख्या सिर्फ नौ की है और उनके उपग्रहों की संख्या भी 50 से 60 जितनी ही है । सूर्य हर साल (एक साल) 13 कि.मी. चौड़ा होता जाता है ।
शुक्र ग्रह पर वातावरण में गर्मी का का एहसास होता है । इस ग्रह पर वनस्पति का नामोनिशान नहीं है । क्योंकि यहां पानी ही नहीं है । यहां का तापमान बहुत ही ऊँचा रहने की वजह से पानी टिक नहीं सकता । यहाँ कलई और शीशा पिघल जाए ऐसा ऊँचा उष्णतामान रहता है । यहाँ कार्बन डाइ-ऑक्साइड को नष्ट कर सकें ऐसी वनस्पति नहीं है । इनका आकार पृथ्वी जितना ही है ।

बुध ग्रह में कार्बन डाइ-ऑक्साइड बिलकुल नहीं है । यह सूर्यमाला का दसवाँ ग्रह माना जाता है । यहाँ वातावरण जैसा कुछ भी नहीं है और वहाँ लोहा धधकता हो वैसा आभास होने लगता है । यह ग्रह लोहे का बना हुआ है । बुध ग्रह का व्यास 4800 कि.मी. है । सूर्य से इनका अंतर 58000000 कि.मी. का है जो दूसरे ग्रह से बहुत ही कम है । वहां का तापमान – 100 डि.से. सेन्टि ग्रेड चला जाता है । बुध ग्रह धीमी धुरी भ्रमण के कारण इनका एक दिन अपने 59 दिन जितना लंबा होता है । इनका साल 88 दिन का ही है जो तीन दिन जैसा होता है ।

इनके अध्ययन के लिए अमरीका ने मरिनर यान भेज कर सूचना इकट्ठी की है । इनके मध्य भाग में ज्यादा मात्रा में लोहा आया हुआ है । मध्य भाग अपनी पृथ्वी जैसी ही लगती है ।

चुटकुला

मास्टर मंगूलाल- बेटा चिपतू, तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए ?
चिपतू- सर गिर गया और लग गई ।
मास्टर जी- कहाँ गिरे और कहाँ लगी ?
चिपतू- बिस्तर पर गिरा और आँख लग गई ।

ज्ञान गोष्ठी

जसोता एम. सुहंदा
वरिष्ठ सहायक

एक मनुष्य बहुत ही सतकर्मी था । बहुत दान-पुण्य, तीर्थ-स्नान, वेद शास्त्रों का पठन-पाठन करता था लेकिन उसको शांति नहीं थी ।

एक बार उसको रास्ते में एक बकरी मिली उसने उस सत्पुरूष से पूछा "तुम दुःखी क्यों हो" ?

सत्पुरूष ने अपने सब सतकर्मों का वर्णन किया और कहा "मैं इतना करता हूँ लेकिन शांति नहीं मिली ।" तब बकरी ने उसको ज्ञान दिया कि तुमने बहुत ही सत्कर्म किए, लेकिन तुमने मेरा काम करना नहीं छोडा ।

तब उस सत्पुरूष ने हैरान होकर पूछा क्या ?

बकरी ने किया....मैं...मैं...मैं

सत्पुरूष को ज्ञान हो गया कि ....मैं...मैं... का अहंकार दुःखी करता है ।

कहने का मतलब है मनुष्य की मैं – मैं कभी भी नहीं जाती....

"मैं – मैं जब जाए
सुख शांति के सागर में वो नहाए"

एक घटना

अजय कुमार
तकनीकी सहायक

बचपन में, मैंने एक कहानी पढ़ी थी, जिसमें एक वीर राजा दूसरे एक राजा को हराकर उसे अपने यहाँ बंदी (गुलाम) बना लेता है । बंदी राजा को सजा के रूप में रोज छोटे-बड़े काम करने पड़ते थे । एक दिन बंदी राजा को वीर राजा एवं मंत्रियों के लिए भोजन बनाने का आदेश दिया गया । बंदी राजा द्वारा बना खाना जब राजा एवं उनके मंत्रियों ने खाया तो सबने उस भोजन की बहुत तारीफ की और वीर राजा प्रसन्न होकर बंदी राजा को मुक्त (स्वतंत्र) कर दिया। अर्थात् बंदी राजा अपने वीरता से नहीं बल्कि अपने किसी दूसरे गुण (भोजन बनाने की कला) से मुक्त हुआ ।

लेकिन इस कहानी का महत्वपूर्ण संदेश मेरे लिये और अधिक सार्थक साबित हुआ जब ऐसा ही कुछ मेरे साथ घटित हुआ ।

बात उन दिनों की है जब मैं इंजीनियरिंग कालेज जाया करता था । सेमेस्टर इग्जाम (परीक्षा) खत्म हो गये थे और सभी छात्र अपने-अपने घर लौट रहे थे । मैं और मेरी एक अच्छी दोस्त (जिसका घर रास्ते में पड़ता था) एक साथ ट्रेन में चढ़ गये । हमलोग को अगले स्टेशन, जो कि मात्र 7-8 कि.मी. की दूरी पर था, उतरना था । चूंकि मेरे साथ मेरी दोस्त (महिला) भी थी, इसलिए भीड़ भरे जनरल डिब्बे में चढ़ना उचित नहीं समझा, और हमलोग नया (Sleeper) डिब्बे में चढ़ गये । (हमलोगों ने जनरल डिब्बे का टिकट लिया था)

अन्दर एक सीट, जिस पर पहले से एक आदमी बैठा था, पर हमलोग भी एडजस्ट करते हुए बैठ गये । कुछ देर बाद, सीट पर बैठे आदमी ने मुझसे पूछा "आपका सीट कौन-सा है ? उस पर जाकर बैठ जाओ ।"

मैं उस व्यक्ति से बोला "हमारे पास नया श्रेणी का टिकट नहीं है । तब उसने ऊँची आवाज में बोला "अगर तुम्हें टी.टी.ई. पकड़ लेगा तो ?" "तो क्या !" मैंने कहा, "टी.टी.ई. कितने ईमानदार होते हैं, मुझे मालूम है । दे दूँगा 20-30 रुपये, सब मान जायेगें । वे तो ऐसे ग्राहक ढूंढते रहते हैं, लोमड़ी कहीं के ।"

उस आदमी का चेहरा गुस्से से लाल होते जा रहा था । तभी एक युवा भिखारी मेरे सामने भींख माँगने लगा । मैंने उस भिखारी से कहा, "तुम इस डिब्बे में फैली गंदगी (कूड़ा-करकट) साफ कर दो, फिर मैं तुम्हें 10 रुपये दूँगा ।"

उसने ऐसा ही किया और मुझसे 10 रुपये प्राप्त किया । मेरे बगल में बैठा व्यक्ति बोला, "एक-दो रुपये देकर हटाना था उसे (भिखारी), ये सब नौटंकी करने की क्या जरूरत थी ।" मैंने कहा "मैं उसे काम करके कमाने के लिए प्रेरित कर रहा था । वह अभी युवा है ।"

कुछ देर बाद, एक वृद्ध महिला, जो कि बैठने के लिए सीट की तलाश कर रही थी, मेरे सामने खड़ी हो गई । वृद्ध महिला को खड़ा देखकर, मुझे अच्छा नहीं लग रहा था, किन्तु मैं भी अपने बगल में बैठी दोस्त से दूर नहीं होना चाहता था । अन्ततः मैने उस वृद्ध महिला को अपनी सीट बैठने हेतु दे दी और मैं खड़ा हो गया ।

तभी मेरे पास बैठा आदमी भी (जो कि थोड़े गुस्से में था) जाने की तैयारी करने लगा । और ज्योंही उसने अपने काले कोट को पहना, हमलोग के पैरों तले जमीन खिसक गई । मैं हक्का-बक्का उसे देखता रहा । मेरी दोस्त भी डरते हुए मेरे पीछे खड़ी हो गई ।

दरअसल, वह व्यक्ति कोई और नहीं, बल्कि खुद टी.टी.ई. था, जिसने गर्मी के कारण अपना कोट और टाई निकाल रखा था ।

कुछ देर, वह हमें घूरा, फिर मुस्करा कर जाने लगा । किन्तु मुझे यह बात हजम नहीं हुई और मैं दौड़ा-दौड़ा उसके पीछे गया और उनसे माफी मांगी तथा उनके द्वारा हमारे खिलाफ जुर्माना / सजा न करने का कारण पूछा ।

टी.टी.ई ने कहा, "बेटा शुरू में, मुझे तुम पर तो बहुत गुस्सा आया था और मैं बहुत ज्यादा जुर्माना + सजा करने वाला था, किन्तु तुम्हारे कुछ दूसरे अच्छे गुणों को देखकर, मेरा विचार बदल गया । और वैसे भी, तुमने जो टी.टी.ई. के बारे में कहा, वो गलत नहीं है । और उसके लिए हम ही जिम्मेवार हैं ।"

मैं बहुत शर्मिंदा महसूस कर रहा था और मैं उनसे केवल सॉरी सर...सॉरी सर, ..कहता रह गया ।

कहानी का संदेश

1. कई बार हम अपने कुछ दूसरे अच्छे गुणों के कारण, किसी मुसीबत से बच सकते हैं ।

2. आपका कौन-सा गुण, आपके सफलता का कारण बन जाये, कोई नहीं जानता । अतः अच्छे-अच्छे गुणों को विकसित कीजिए ।
3. अगर आप अपने किसी एक अवगुण को दूर नहीं कर सकते तो, उससे कई गुना अधिक अच्छे गुणों को अपने अंदर विकसित कीजिए ।

दृष्टांत

नौलखा हार

जसोता एम. सुहंदा
वरिष्ठ सहायक

एक गुरु के पास दो शिष्य थे एक का नाम था किशन और दूसरे का नाम था मोहन ।

किशन बहुत ही सेवा भावी और नम्रता वाला था । वह गुरु के लिए खाना बनाता, गुरु के कपड़े धोता, आश्रम का सारा काम खुद ही करता था । जब शाम को सत्संग के लिए संगत आती थी तो बड़े प्रेम से उनको मिलता, पानी पिलाता और खुद भी सत्संग में बैठ जाता था।

मोहन जो था वह खाली गुरु के सामने बैठ जाता था कोई काम-धंधा भी नहीं । बैठे-बैठे ही उसकी सेवा होती थी और वह भी बड़ा आलसी-सुस्त होकर पड़ा रहता था । सत्संग सुनता और सो जाता ।

एक दिन किशन ने गुरु से पूछा कि गुरु जी वो खाली बैठा ही रहता है उसको कुछ सेवा करना अच्छा ही नहीं लगता ?

गुरु ने बड़े प्यार से कहा "बेटा उसने गले में नौलखा हार पहना हुआ है वह जब मैं चोरी करूंगा तब वह सेवा करेगा" ।

किशन के मन में उसके गले का नौलखा हार देखने की लालसा जागी क्योंकि वह गरीब घर का लड़का था । उसको तो लगा यह कैसे हो सकता है ? उसके गले में नौलखा हार और वह एक आश्रम में रहता है, यह तो बहुत ही आश्चर्य की बात है !

सत्संग सुनते-सुनते मोहन में थोड़ा सा बदलाव आया । एक दिन गुरु ने कहा जाओ गायों को पानी पिला कर आओ । वह गया, एक ही गाय को पानी पिला कर फिर आकर बैठ गया ।

थोड़े दिनों के बाद फिर से गुरु ने कहा "गायों को चारा और पानी देकर आओ" वह गया, गायों को चारा और पानी देकर आया । ऐसे धीरे-धीरे करके गुरु ने उसको भी सेवा में लगा दिया अब दोनों प्रेम से सेवा करने में लगे रहते थे ।

एक दिन गुरु से फिर किशन ने पूछा "गुरु जी वो नौलखा हार कौन-सा था" – गुरु ने कहा "अरे ! वह तो उसका **"अंहकार"** था ।"

संत लोग बताते हैं सत्पुरूषों का संग औ सत्संग से सब विकार खत्म हो जाते हैं।

<u>मेरा स्वप्न विहार अंतरिक्ष में</u>

श्वेता अग्रवाल
वैज्ञा./अभि.

मेरा नाम है आशा । पूरा नाम बताना हो तो लोग मुझे श्रीमती आशा शर्मा के नाम से पहचानते हैं । मैं एक शिक्षिका हूँ या यूं कहिए कि शिक्षण ही मेरी जीविका का एकमात्र स्रोत है । मैं केन्द्रीय विश्व विद्यालय में विज्ञान का प्रचार-प्रसार करती हूँ जो कि मेरा पसन्दीदा विषय है । मेरे पिताजी एक वैज्ञानिक थे । बचपन से ही मैंने अपने पिताजी से विज्ञान से संबंधित काफी विषयों के बारे में ज्ञान प्राप्त किया है और यही मेरी विषय में रुचि का प्रमुख कारण भी है । जब से जन्म लिया एक शब्द जिसने मुझे ही नहीं मेरे पिताजी को भी परस्पर अपनी ओर आकर्षित किया है – अंतरिक्ष ।

अंतरिक्ष शब्द का उच्चारण करते ही मेरे मन बरबस ही कल्पनाओं की रंगबिरंगी दुनिया में विचरण करने को निकल पड़ता है । पता ही नहीं चलता कि कब आप वास्तविकता की सारी सीमाएं पार कर एक विचित्र स्थान का अनुभव करने लगते हैं । बात बहुत पुरानी मेरे बचपन की है जब मैं और मेरा छोटा भाई रात का भोजन समाप्त करते ही अपने पिताजी के पास उनके अजब-गजब किस्से कहानियाँ सुनने बैठ जाते थे । उस दिन सम्पूर्ण विश्व "अंतरिक्ष दिवस" मना रहा था तो रात का इंतजार खत्म होते ही हम दोनों ढेरों सवाल मन में लिए पिताजी के समीप जा पहुँचे । वह कुछ अति-विशेष कार्य में विलीन थे मगर हमारे कौतुहूल से भरे हावभाव देख कर वह खुद को मुस्कुराने से नहीं रोक पाए । फिर हम दोनों को ले कर हमारे शयनकक्ष में आए और कहा कि आज वह हमें अंतरिक्ष के बारे में जानकारी देंगे । सुनकर हम दोनों की आँखें खुशी से चमक उठी । बस फिर क्या था हमने तो प्रश्न नगरी के द्वार ही जैसे खोल डाले, एक के बाद एक सवाल । सारे प्रश्नों के उत्तर देने के उपरांत पिताजी हमें शुभ रात्रि कहकर वापस अपना कार्य सम्पूर्ण करने चले गये । मगर हम दोनों तो वाद विवाद में फंस गये कि किसने ज्यादा सवाल पूछे और किसके सवालों की पिताजी ने ज्यादा सराहना की । ऐसे में दिनभर की थकान और प्रश्नोत्तरी के संतोष के बाद कब हम दोनों निद्रा की गोद में लीन हो गए, पता ही नहीं चला । आँखे खुली तो देखा चारो ओर एक रंगबिरंगी

रोशनी फैली है और दूर-दूर तक किसी का नामोंनिशां भी नहीं दिख रहा है । सर्वप्रथम तो भय का अनुभव हुआ और साथ ही आश्चर्य भी कि सभी लोग मुझे ऐसे अकेले छोड़कर भला कहाँ चले गए । किन्तु इतना सुन्दर अलौकिक नजारा आँखों के सामने था कि अवसाद ज्यादा देर तक टिक नहीं पाया और स्वतः ही मेरे पैर उस अनजान लोक का भ्रमण करने बढ़ चले । बड़ी ही मनभावन प्रकृति थी, चारों ओर भिन्न-भिन्न प्रजाति, रंगों के पुष्प खिले थे । बड़े-बड़े पेड़ों की शाखाएँ झुक-झुक कर पृथ्वी का आलिंगन कर रही थी । वातावरण एकदम शांत, सहज और पवित्र था, साथ ही मन्द-मन्द पवन अपने साथ में फूलों की भीनी-भीनी सुगन्ध बिखेर रही थी ।

ऐसा प्रतीत होता था कि मानो सारी काव्य रचनाएँ इसी स्थान पर प्रतिस्थापित की गई हों । सहसा मैने पाया कि मैं भी कुछ गुनगुना रही थी । तभी मेरी दृष्टि एक भयंकर प्रतीत होने वाले जीव पर पड़ी । मैंने पाया कि वह जीव बड़ा ही अद्भूत था, जैसे कि साधारण जानवरों के भिन्न-भिन्न स्वरूपों को जोड़ कर एक आकृति बनाई गई हो । उसका कद हाथी जितना विशाल था, सूंड भी थी मगर कुछ ज्यादा बड़ी, भारी और निचली तरफ से फैली हुई । उसके शरीर पर सिंह जैसा आवरण था मगर वह भालू जैसे रंग का था । कुछ देर तक हम दोनों एक दूसरे को निहारते रहें । तभी पेड से कुछ गिरा और फिर क्या था वो अद्भुत जानवर मेरे प्राणों का शत्रु बन बैठा । दौड़ते दौड़ते कितनी ही बार मेरे पैर डगमगाएँ, वृक्षों में उलझे मगर मैंने भी हार नहीं मानी तभी मेरे हाथ एक बंदूक लगी । मैंने बंदूक से उस जानवर पर गोलियाँ चलाई तो थोड़ी देर बाद उसने मेरा पीछा करना छोड दिया । तब जाकर मेरी जान में जान आई । थोडी दूर आगे बढने पर पुनः एक बेहद खूबसूरत प्राकृतिक दृश्य का अवलोकन हुआ । मन को एक अजीब सी तृप्ति का आभास हुआ किन्तु ये क्या, ये स्थान तो काफी परिचित सा अनुभव हो रहा । काफी सोचने के बाद ज्ञात हुआ कि आज कक्षा में ही टीचर इस चित्र को दिखाकर अंतरिक्ष के बारे में बता रही थी । इतना समझ में आते ही बड़ा रोमांच हो आया किन्तु मेरा बाल मन ये समझ ही नहीं पाया कि वह स्वप्न नगरी में विचरण कर रहा है अपितु एक नई तरह की होड़ मन में जाग उठी कि इस स्थान की समस्त जानकारी प्राप्त करके कल मैं टीचर की प्रशंसापात्र बन जाऊँगी ।

यह सब सोचकर मैं फिर आगे बढ़ गई । थोडी दूर जाकर मैंने एक छोटा सा, नटखट सा दिखने वाला जीव देखा । पता नहीं क्यों, उसे देखते ही मुझे अपने छोटे भाई की याद आ गई जिसे घर में सब डांट कर कहा करते थे कि गिलहरी को ज्यादा तंग करोगे तो गिलहरी बन जाओगे । बस वहाँ उस वक्त उस अद्भुत मगर अपने भाई से मिलती-जुलती गिलहरी को देखकर सारा भय, सारी थकान दूर हो गई और एक विशिष्ट संतोष, विजय का अनुभव हुआ।

और आगे जाने पर मुझे एक मनुष्य जैसी आकृति दिखाई दी । पहले तो मुझे विश्वास ही नहीं हुआ कि यहाँ अंतरिक्ष में भी मनुष्य रहते हैं और वैसे भी अभी पिताजी ने भी यही बताया था कि अभी तक मनुष्य अंतरिक्ष में रहने का सामर्थ्य नहीं कर पाए हैं । परन्तु इस मनुष्य आकृति को देख मन में शंका जाग उठी और मैं उस आकृति के पीछे चल पड़ी । पास पहुँचने पर मैंने पाया कि वह सचमुच में मनुष्य से मिलती-जुलती है परन्तु मनुष्य है नहीं । मुझे रोमांच हो आया, मैने अंतरिक्ष प्राणियों की कितनी कथाएँ सुनी थी मगर आज उन्हें अपने सामने प्रत्यक्ष देख कर मैं भाव-विह्वल हो उठी । उसके समीप पहुँचने पर मैंने पाया कि वह काफी लंबे कद काठी का था । उसका नयन नक्ष भी काफी भिन्न था । मुझे देखकर वह तुरन्त ही समीप की झाड़ियों में कूद कर एकदम अदृश्य हो गया । मैंने कई बार पुकारा परन्तु उसने नहीं सुना । मैं भी उसके पीछे दौडती रही । तभी मेरा पैर फिसल गया । गिर जाने के भय से मैने अपनी आंखें बंद कर दी मगर तभी कहीं से पीछे से किसी ने मेरा हाथ पकड लिया और मैंने पलट कर देखा कि वह तो वही मनुष्य जैसी आकृति है ।

मैं उसका धन्यवाद दे पाती उसके पहले ही उसने किसी अजीब सी भाषा में चिल्लाना प्रारम्भ कर दिया । उसे देख ऐसा लगा कि कोई उत्पाती वानरसेना हमले की तैयार कर रही हो । तभी मैंने ध्यान दिया कि उसकी आँखें बड़ी बड़ी थी । और उसके पास एक पूंछ भी थी । मेरे कुछ ना बोलने पर वह और भी ज्यादा भड़क गया था । तभी उसी के जैसे 5-6 और लोग आ गए और मुझे पकडकर ले गए । दो लोग मुझे अपने मुखिया के पास ले गये थे । मैं इतने सारे एक प्रजाति के लोगों को देखकर एकदम आश्चर्यचकित थी । तभी वहाँ एक वयोवृद्ध व्यक्ति ने आकर मुझसे कुछ पूछा । किन्तु समझ ना आने के कारण मैं उत्तर नहीं दे पाई । इस कारण वहाँ उपस्थित सभी लोग नाराज हो गए और शोर मचाने लगे । चारों ओर ढ़ोल बजने लगे । मैं इतना शोर सहन नहीं कर पा रही थी और मैंने अपने कान ढक लिये और मुड़ने के लिए जैसी ही पलटी, अपने बिस्तर से जमीन पर आ गिरी । जोर से आवाज हुई तो घर के बाकी लोग दौडे दौडे आए और मेरा हालचाल पूछने लगे ।

मैं समझ ही नहीं पा रही थी कि अकस्मात मैं यहाँ इन लोगों के बीच में कैसे आ गई । परन्तु सब कुछ भूल कर मैंने अपना सिर अपनी माता की गोद में रख दिया । अगले दिन सबके साथ चर्चा करने पर मुझे समझ में आया कि पिछली रात को मैंने स्वप्नों में अंतरिक्ष नगरी का विहार किया । यह ज्ञात होते ही जैसे गर्व से मेरा सिर स्वतः ही ऊँचा हो गया ।

इस प्रसंग को व्यतीत हुए वर्षों हो गए किन्तु जब कभी याद करती हूँ एक मुस्कुराहट चेहरे पर छा जाती है । ऐसा ही होता है जब हम खो जाते हैं अंतरिक्ष के मायानगरी समान जाल में ।

आज भी मैं अपने सभी विद्यार्थियों को विज्ञान जगत के नए प्रसंगों से अवगत कराने में जो आनन्द प्राप्त करती हूँ वह मुझे मेरे बचपन के दिन याद दिलाता है।

वो दिन कभी भुला न पाए

बी.एन.शर्मा,
वैज्ञा./अभि.

आज बाजार में कुछ ज्यादा ही गहमा-गहमी थी । मेरा यह छोटा सा कबीर नगर, औद्योगिकरण की देन था । इस्पात मिल की चारदिवारी से आगे फैली हुई यह बस्ती, उस मिल में काम करने वाले मजदूरों से बसी थी । शहर से यद्यपि यह दूर था, पर शहरीकरण की पुरी नुमाईश देखने को मिलती थी । यहां का यह बाजार, बहुत ही तंग जगह पर उग आया था । बाजार के बीच से, कहने को, एक रास्ता शहर की ओर जाता था । मैं यहीं चौराहे पर बहुत बेसब्री से आटोरिक्शा के इंतजार में खड़ा था । चौराहे के उस पार कल्लू हलवाई बड़ी तन्मयता से जलेबियां तल रहा था । आज लगता है, उसकी ग्राहकी ज्यादा थी। सामने मेरी नजर डॉ. वरूण पर पड़ी । आज पहली बार मैंने उन्हें घबराया हुआ देखा और वह असमय ही अपना दवाखाना बंद कर रहे थे । इन मजदूरों की बस्ती में यही एक मात्र डाक्टर थे, जिन्होंने न जाने कितने लोगों को मौत के मुँह से निकाला था । कहते हैं यह इस्पात मिल डॉ. साहब के पिता की थी, जिसे साझेदारों ने हड़प लिया था । यह सदमा उन पर भारी पड़ा और उनका देहांत हो गया । पूरे परिवार की जिम्मेवारी डाक्टर वरूण पर आ गई थी। ले देके डाक्टरी की पढ़ाई पूरी की और अपना दवाखाना शहर में चालू किया । उनकी पत्नी भी डाक्टर थी और दोनों ने अपने श्रम से एक बहुत बड़ा दवाखाना शहर में स्थापित किया । परन्तु जैसे डाक्टर साहब को इस मिल और उसमें काम करने वाले लोगों से बहुत लगाव था, शहर का दवाखाना पत्नी के हाथों छोड़, खुद इस गरीब बस्ती में दवाखाना चलाने लगे । डॉ. वरूण का नाम इस बस्ती के लोगों के लिए भगवान से बड़ा था । कौन भला आज के जमाने में गरीबों की सुध लेता है । पूंजीवादी दौर में डॉ. वरूण जैसे लोग शायद भगवान के अवतार ही होते होंगे ।

मेरा ध्यान डाक्टर साहब की ओर था । वह काफी घबराये से दवाखाना बंद कर अपनी कार को सड़क पर मोड़ रहे थे । सड़क क्या गली थी । मोड़ते ही उनकी कार से सामने से आती एक सायकल टकरा गई और वह सायकल सवार जमीन पर गिर पड़ा । देखते ही देखते लोगों की भीड़ जमा हो गई । मुझे भी जल्दी एक अस्पताल पहुँचना था, परंतु भीड़ देखकर मैं भी उस ओर मुड़ पड़ा । वह सायकल सवार जमीन पर बेहोश पड़ा था । लोगों की उग्र भीड़ ने डाक्टर साहब को गाड़ी से उतरने के बाद घेर सा लिया और चिल्लाने लगे । डाक्टर साहब ने व्यक्ति को जांचा-परखा और उग्र भीड़ को कहा 'देखो भाईयों यह सदमे की वजह से सिर्फ बेहोश हुआ है, मैं इसे इंजेक्शन देता हूँ, थोड़े आराम के बाद इसे होश आ जाएगा'। 'मुझे जल्दी कहीं पहुंचना है, अन्यथा मैं इसे अपने अस्पताल में रख लेता ।' यह सुनते ही उग्र भीड़ और भी हंगामा करने लगी । मैं भी हैरान था कि जिस डाक्टर साहब की तुलना हम बस्ती वाले भगवान से करते हैं, वही आज एक घायल व्यक्ति को छोड़कर जा रहे हैं । मैंने आवेश में कहा 'नहीं डाक्टर साहब, आपको इसका इलाज अभी इसी दवाखाने में करना होगा। हम सब ऐसे नहीं मानेंगे।' मेरी बात सुन भीड़ में से एक व्यक्ति चिल्लाया 'अरे, इनको इस मरीज से ज्यादा अपने सुख की पड़ी है, शायद इन्हें टेनिस खेलने की ज्यादा जरूरत है ।' सभी जानते थे डाक्टर साहब टेनिस के बहुत शौकीन थे, और रोज शाम को दवाखाना बंद कर अपने क्लब में टेनिस खेलने जाते थे ।

लोगों का गुस्सा बढ़ता गया । मजबूरी में डाक्टर साहब को, मरीज के होश आने तक वहां रूकना पड़ा । इस अफरातफरी में मैं भी भूल गया था कि मुझे शहर के अस्पताल में जल्दी पहुँचना था । कमोबेश में एक घंटा बीत जाने के बाद व्यक्ति को होश आया और लोगों के साथ उसे भी । भीड़ छटने लगी और डाक्टर साहब जल्दी जल्दी, हड़बड़ाये से अपनी कार में चल दिए ।

थोड़े इंतजार के बाद मुझे भी आटोरिक्शा मिल गया और मैं अपने गंतव्य की ओर निकल पड़ा । आटो की गति हमारी बस्ती की सड़क निर्धारित करती है, पर मैं आटोवाले पर बिफर पड़ा 'अरे भैया, क्या तुम मुझे कल पहुंचाओगे । वहां किसी की जान पर बनी है, और तुम जैसे सायकल चला रहे हो ।' आटो वाले ने अपनी खीज़ आटो की गति बढ़ाकर निकाली । टूटी-फूटी सड़क पर हिचकोले खाती, आटोरिक्शा तेजी से आगे बढ़ने लगी ।

शहर के अस्पताल पहुंचते ही, मैं भागते हुए शल्य चिकित्सा विभाग पहुंचा । मेरी बहन, जो इस अस्पताल में एक नर्स थी, उसीने मुझे फोन कर बुलाया था कि किसी बच्चे को तत्काल खून की जरूरत है । मैं भागता हुआ शल्य चिकित्सा कक्ष तक पहुंचा । मेरी बहन मुझे वहां आते दिखी । मुझे देखते ही बरस पड़ी । 'अरे तुमने इतनी देर कर दी, खून की कमी से उस

बच्चे को हम बचा नहीं पाए ।' मैं धक से रह गया । नजर उठाकर मैंने सामने देखा, डॉ. वरूण उस मरे हुए बच्चे से लिपट कर रो रहे थे ।

वो दिन मैं आज भी नहीं भुला पाया हूँ ।

भारत में नक्सलवाद की समस्या

दिलीप कुमार सी महेता
वैज्ञा/अभि.

भूमिकाः

नक्सलवाद क्या है ? यह नाम कहाँ से आया ? गांधीवाद, मार्क्सवाद, लेनिनवाद, समाजवाद, साम्यवाद, माओवाद इत्यादि नाम तो फिर भी समझ में आते हैं लेकिन ये नक्सलवाद किस बला का नाम है ?

सत्तर के दशक में नक्सलवादी नामक गाँव में एक आंदोलन हुआ था । भूमिहीन खेत मज़दूरों का यह आंदोलन धीरे-धीरे समाज के आर्थिक रूप में पिछड़े, दलित, पीड़ित एवं शोषित लोगों में फैल गया । अपने हक, मूलभूत जरूरतों की पुष्टि हेतु लड़ाई इतनी प्रचलित हुई कि उन आंदोलनकारियों को नक्सलवादियों का नाम दिया गया और इस लड़ाई के स्वरूप को नक्सलवाद कहा गया ।

नक्सलवादियों की लड़ाई हिंसक थी । वे मानते हैं कि जो वंचित हैं उन्हें पूंजीपतियों, जमाखोरों की संपत्ति हिंसाचार द्वारा हथियाने का अधिकार है । वे राज्य के प्रशासन, कानून द्वारा स्थापित विधि-विधानों को नहीं मानते । प्रशासन को अपना दुश्मन समझते हैं क्योंकि इन्हीं की बदौलत उनकी यह बदतर हालत हुई है । चारू मजुमदार नामक नेता ने पश्चिम बंगाल में यह आंदोलन शुरू किया था। अब तो इस आंदोलन का कोई एक सर्वमान्य नेता नहीं है लेकिन देश के पिछड़े इलाकों में यह इतना फैल चुका है कि केन्द्र सरकार के लिए इसे काबू में लाना असंभव सा हो गया है ।

विस्तारः

भारत में नक्सलवाद की समस्या से सर्वाधिक पीड़ित राज्य झारखंड, छत्तीसगढ़, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उड़िसा, पश्चिम बंगाल एवं बिहार है और कुछ राज्यों में भी नक्सलवाद अपना प्रभाव

छोड़ रहा है । राज्यों की सरकारें इसे अधिक महत्व नहीं देती थी एवं शक्ति का उपयोग करते हुए कुचलने की कोशिशें करती रही । थोड़े बरसों तक यह समस्या राजनीतिज्ञों के ध्यान से ओझल रही । इस समय के दौरान नक्सलवाद, आदिवासी, गरीब एवं पिछड़े इलाकों में पूरी तरह फैल गया । शोषित, पीड़ित लोगों ने अनुभव किया कि स्वतंत्रता के साठ वर्ष बाद भी उनकी हालत में सुधार तो न हुआ, बल्कि स्थिति और भी बदतर होती जा रही है – पानी गले तक आ पहुँचा है । तब वे मरने-मारने पर उतारू हो गये । थोड़े दिन पूर्व बिहार में पुलिस जवानों की अगुवाई एवं एक की हत्या इन्हीं आक्रोश का परिणाम है । फिर भी हमारी सरकारें, स्वयंसेवी संस्थाएं सो रही हैं ।

योजनाः

नक्सलवाद इतना फैलने के बावजूद, इतनी पुरानी समस्या होते हुए भी किसी ने भी इसका हल ढूँढने की कोई कोशिश नहीं की है । अलग-अलग प्रदेशों की सरकारें जो छुट-पुट कदम उठा रही हैं वे न तो सुनियोजित है और न ही पर्याप्त । मूल समस्या, उसका हल इत्यादि, समस्या के समाधान के लिए योजना एवं उसका अमलीकरण, इस विषय में कोई सुनियोजित चर्चा तक नहीं हुई है । केन्द्र सरकार ने नक्सलवादग्रस्त राज्यों के मुख्यमंत्रियों की बैठक बुलायी थी उसमें भी बिहार जैसे राज्य के मुख्यमंत्री उपस्थित नहीं थे ।

सब अपनी-अपनी राजनीति में व्यस्त है । समस्या के समाधान में किसी की कोई दिलचस्पी नहीं । समस्या का सर्वाधिक राजनैतिक लाभ उठाने की ही एक मात्र गिनती है । बंगाल में एवं बिहार में चुनाव नजदीक है इसलिए सब नक्सलवादियों का साथ लेने में जुट गये हैं । देश के विषय में या इनके परिणामों के विषय में कोई नहीं सोचता ।

आज यह समस्या कश्मीर समस्या से भी गंभीर स्वरूप धारण कर चुकी है । क्योंकि कश्मीर एक ही राज्य है और वहाँ दुश्मन कौन है वो भी पता है जबकि नक्सलवादग्रस्त राज्य तो अनेक है और वहाँ जिसे दुश्मन कहे वे सभी अपने ही लोग है । केवल वे भूखमरी, गरीबी, पिछड़ेपन, बेरोजगारी जैसी आर्थिक समस्या से पीड़ित है । उनकी कोई राजकीय महत्वाकांक्षा नहीं है । उन्हें महात्मा गांधी जैसा कोई नेता चाहिए जो उनको समझे और उनके साथ रहे, उनके लिए जिये और उनके लिए काम करें ।

केन्द्र सरकार को चाहिए नक्सलवादग्रस्त इलाकों के लिए एक एकीकृत योजना बनाये और उसका सुचारू रूप से अमलीकरण करवाये । इस समस्या को केवल हिंसक आंदोलन समझकर बलप्रयोग से कुचलना हाराकीरी होगी । फिलहाल तो गंभीर रूप से कोई इस विषय में सोचता हुआ भी नज़र नहीं आता । किसी को इतनी बड़ी समस्या से निपटने की फुर्सत तक नहीं । गृहमंत्री कुछ सोचते-बोलते हैं तो बाकी मंत्री कुछ और ही सोचते-बोलते हैं । कहीं कोई संकलन नहीं है । भगवान भरोसे देश चल रहा दिखता है । गुजरात जैसे आर्थिक रूप से

समृद्ध राज्य में यह समस्या नहीं है क्योंकि आर्थिक समृद्धि के लाभ भले ही थोड़ी मात्रा में सही, निचले तबके के लोगों तक पहुँचे हैं । पूरे देश में यह करना होगा अन्यथा देश हिंसाग्रस्त होकर कमज़ोर पड़ जाएगा । अंदर से खोखला हो जाएगा और बाहरी दुश्मनों का सामना करने में नाकाम हो जाएगा ।

भारतीय समाज और भ्रष्टाचार

संगीत कुमार मिश्रा
प्रशासन अधिकारी

प्रस्तावनाः भ्रष्टाचार उस आचरण या व्यवहार को इंगित करता है जिसके अन्तर्गत कोई व्यक्ति अपने पद का निजी लाभ के लिए दुरूपयोग करता है । साधारण शब्दों में इसे रिश्वत का खेल भी कह सकते हैं ।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री डी.एच.नाथ; मोरिस सेफल एवं एण्ड्रोस्की ने इसे निजी लाभ के लिए अपनी आधिकारिक हैसियत का अपने हित में उपयोग करना जो आर्थिक लाभ के लिए नहीं भी हो सकता है । भ्रष्टाचार के अन्तर्गत निम्नलिखित क्रियाकलाप सम्मिलित होते हैं-जैसे रिश्वतखोरी, दुर्विनियोग, पक्षपात, भाई-भतीजावाद इत्यादि ।

भ्रष्टाचार आज एक जीवनशैली बन गई है । इसका स्वरूप सार्वभौमिक हो गया है। इसका अस्तित्व अनंत समय से पूरे विश्व में व्याप्त है । प्राचीन समाज में रोम, वेवीनीनिया हैव्यु में अधिकारी एवं न्यायाधीश रिश्वत लेते थे । एवं इंग्लैंड के चुनाव में भ्रष्टाचार आम बात थी।

भारतीय परिपपेक्ष्य में भ्रष्टाचार के विषय में कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र राजकोष के अधिकारियों द्वारा गबन करने का संदर्भ दिया है । उन्होंने उनके द्वारा 50 प्रकार के गबन, दलाली का उल्लेख किया है । मध्यकालीन भारत में भ्रष्टाचार का उल्लेख उतना नहीं मिलता है क्योंकि उस समय कर वसुलने वाले अधिकारी अधिक नहीं थे । अंग्रेजी हुकूमत के समय भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पर था । क्लाइव और हेस्टिंगज इस कदर भ्रष्ट थे कि इंग्लैंड लौटने पर उन पर संसदीय समिति द्वारा मुकदमा चलाया गया । उस समय अंग्रेज तो भ्रष्ट थे ही भारतीय अधिकारी भी रिश्वत लेते थे । प्रथम एवं द्वितीय विश्वयुद्ध के आर्थिक क्रियाकलापों ने भ्रष्टाचार के नए उपादानों को जन्म दिया ।

विश्वयुद्ध के दौरान लगाये गए प्रतिबंध, नियंत्रण के द्वारा अधिकारी आम वर्ग को लूटने में लग गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत दो दशक तक राजनीतिक अभिजात वर्ग भ्रष्टाचार से दूर रहा । लेकिन 1962 एवं 1967 के आम चुनाव के बाद तथाकथित नवोदित राजनीतिक वर्ग भ्रष्टाचार में लग गया।

अब प्रायः सभी सार्वजनिक कार्यालयों में छोटी-छोटी बातों के लिए बड़े-बड़े रिश्वत लेने लग गए । जिसमें निम्न स्तर से उच्चतम स्तर के अधिकारी सम्मिलित पाए गए ।

स्वतंत्र भारत में पहली बार मध्य प्रांत के मंत्री राव शिव बहादुर सिंह को 25000 जीपों के खरीद में दलाली खाने का आरोप था । इसके बाद मुंदरा कांड सामने आया । इन्दिरा गांधी के शासन काल में नगरवाला कांड एच.डब्लू. की पनडुब्बी खरीद मामला इत्यादि सामने आया। फिर 1990 के दशक में कुछ महत्वपूर्ण घोटाले निम्नलिखित हैं-

1. युरिया घोटाला
2. बोफोर्स घोटाला (113 करोड)
3. चारा घोटाला जिसमें बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री का नाम सामने आया ।
4. हवाला कांड
5. चीनी घोटाला
6. प्रतिभूति घोटाला
7. इंडियन बैंक घोटाला
8. दूरसंचार घोटाला
9. स्पेक्ट्रम घोटाला इत्यादि मुख्य रहे हैं । जिसमें बड़े नेता, मंत्री, मुख्यमंत्री शामिल थे।

हमारे देश में अपनी ईमानदारी छवि के राजनेता उंगली पर गिने जा सकते हैं । सरदार वल्लभ भाई पटेल एवं लाल बहादुर शास्त्री जैसे नेता जो बेहद ही ईमानदार छवि के थे एवं उनके मरने के उपरांत उनके बैंक खातों में कुछ भी जमा-पूंजी नहीं थी । सभी नेता भ्रष्ट है कुछ अपवादों को छोड़कर । मंत्री बनते ही वे अकुट धन संपदा के मालिक बन बैठते हैं । आय से अधिक धन एकत्रित करते हैं । ईमानदार छवि के राजनीतिज्ञ लुप्तप्रायः हो गये हैं ।

लोकसेवक (नौकरशाही) में भ्रष्टाचार प्रकृति, रूप, स्थान के अनुसार भिन्न-भिन्न तरह के पाए गए हैं । प्रायः हर विभाग में भ्रष्टाचार इस कदर फैला हुआ है कि बिना रिश्वत के आपका कार्य नहीं हो सकता है । भ्रष्टाचार का बृहत फैलाव पुलिस, राजस्व, चुंगी, पेट्रोलियम, रक्षा विभाग में ज्यादा है । भ्रष्टाचार वहां पर अधिक है जहां पर लाइसेंस निर्गमन, ठेका आबंटित किया जाता है, चेक निर्गमित किया जाता है । पहले गलत कार्य करने के लिए रिश्वत देनी पडती थी अब सही कार्य को सही समय पर करने के लिए रिश्वत देनी पड़ती है । रिश्वत पूरे विभाग में हिस्से के रूप में बांटा जाता है । जो अधिकारी रिश्वत नहीं लेते हैं उन्हें या तो बेवकूफ या आदर्शवादी समझा जाता है । पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने एक सभा में इस तथ्य को स्वीकार किया था कि केन्द्र द्वारा जो 100 रुपये की मदद दी जाती है वह नीचे तक पहुंचते-पहुंचते सिर्फ एक रुपया बचता है ।

आजकल राजनीति भी भ्रष्टाचार का अड्डा बन गया है । चुनाव में बड़े पैमाने पर काले धन का उपयोग होता है । 1993 में गठित बोहरा समिति ने राजनीति को अपराधी और नेताओं का अड्डा

माना था । उन्होंने इसे रोकने के लिए चुनाव में खर्च का सरकार अथवा निर्वाचन आयोग द्वारा वहन करने की अनुशंसा की थी । इंग्लैंड, जर्मनी, नार्वे में चुनाव पर खर्च स्टेट फंडिग से होता है ।

संथानम समिति की सिफारिश पर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सन् 1964 में केन्द्रीय सतर्कता आयोग की स्थापना की । जिसके अन्तर्गत सरकारी कर्मचारी पर भ्रष्टाचार के आरोपों की जांच की जा सके और आगे की कार्रवाई हो । सरकार ने 1947 के भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम को संबोधित कर 1980 में नया भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम लागू किया । इससे पहले के अधिनियम में लोक सेवक पर लगे आरोपों को संज्ञेय अपराध नहीं माना जाता था । इस अधिनियम के अन्तर्गत भ्रष्टाचार में दोषी पाए गए अधिकारियों, कर्मचारियों को 6 महीने से 5 वर्ष तक की सत्ता का प्रावधान है ।

भ्रष्टाचार हमारे समाज में कैंसर की तरह फैल चुका है । इसके द्वारा अराजकता की स्थिति देश में उत्पन्न हो गई है । व्यक्तियों का नैतिक पतन हो रहा है । भाई-भतीजावाद, क्षेत्रीयतावाद, पक्षपात को बढ़ावा मिला है । मिलावट एवं जमाखोरी में वृद्धि हो गई है । एक गैर सरकारी संख्या ट्रांसपेरेंसी इंटर्नशिप के अध्ययन के अनुसार भारत का स्थान विश्व के अष्टतम देशों में है । CPI इन्डेक्स में इसका स्थान सन् 2009 की तुलना में 85 से लुढ़क कर 87 पहुंच गया है ।

भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भारत के 11 राज्यों में लोकायुकत की स्थापना की गई है जो मुख्यमंत्री, मंत्री, नेता, विधायक, लोकसेवक पर लगे आरोप की जांच कर सकते हैं । पर केंद्रीय स्तर पर अभी तक लोकपाल का गठन नहीं हो पाया है। जिसके अधिकार क्षेत्र में प्रधानमंत्री, न्यायाधीश, कैबिनेट मंत्री आ सकते हैं। 1995 से अभी तक यह बिल संसद में पास नहीं हो सका है । भ्रष्टाचार निरोधक संस्था, तथा केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो, केन्द्रीय सतर्कता आयोग, प्रवर्तन निदेशालय, पुलिस भ्रष्टाचारियों को अभी तक कठोर सजा दिला नहीं पाई है । इसलिए लोग अब न्यायिक सक्रियवाद की बात कर रहे हैं । भ्रष्टाचार को रोकने के लिए निम्नलिखित उपाय सुझाये जा रहे हैः

- पुराने कठोर, जटिल, द्विअर्थी कानून में संशोधन किया जाए ।
- सूचना के अधिकार का अधिक उपयोग किया जाए ।
- कानून में भ्रष्टाचारियों के लिए कठोर सजा का प्रावधान हो ।
- समाज में इसके लिए जागरूकता अभियान चलाया जाएं ।
- भ्रष्टाचार को सामाजिक शास्त्र के एक पाठ्यक्रम के रूप में दसवीं कक्षा तक अनिवार्य रूप से पढ़ाया जाए ।
- चुनाव के खर्च स्टेट द्वारा आयोजित हो ।
- राजनीति में आरोपित अथवा जिस पर मुकदमा चल रहा हो भाग लेने पर रोक लगे ।
- ईमानदार अधिकारी को प्रोन्नत के अधिक अवसर प्रदान किए जाएं ।

कार्ल क्रुक्स ने भ्रष्टाचार के बारे में यहां तक कहा है कि भ्रष्टाचार, वेश्यावृत्ति हो बुरी चीज है क्योंकि वेश्यावृत्ति तो अमुक व्यक्ति के नैतिक पतन करता है पर भ्रष्टाचार पूरे राज्य का पतन कर सकता है । अभी हाल ही में राष्ट्रमंडल खेल में भी भ्रष्टाचार का खुलासा हुआ है जो चौंका देने वाली घटना है । सरकार ने पूर्व महालेखा एवं नियंत्रक परीक्षक श्री बी.के. शुक्ल की अध्यक्षता में एक समिति का

गठन किया है जो इसकी जांच करेगा । वर्तमान सतर्कता आयुक्त पर भी विपक्षी पार्टी ने आरोप लगाया है कि वे पाम ऑयल घोटाले में शामिल रहे हैं । इसके लिए उनकी नियुक्ति नहीं होनी चाहिए।

अगर हमें भ्रष्टाचार से मुक्ति पानी है तो हमे स्कैन्डिवियन देशों का अनुसरण होगा जो अपने आपमें एक मिशाल है और समाज में इसके विरूद्ध जागरूकता अच्छा कदम सिद्ध होगा।

प्राकृतिक आपदा प्रबंधन में अंतरिक्ष विज्ञान का योगदान

दिनेश कुमार अग्रवाल
वैज्ञा./अभि.

अंतरिक्ष विज्ञान विज्ञान की वह शाखा है जिसमें विज्ञान कि विभिन्न शाखाएं है और क्रमबद्ध ज्ञान को ही विज्ञान कहते है । आज विज्ञान के अध्ययन और उसके उपयोग से मानवजाति ने अपने जीवन-यापन के स्तर में व्यापक सुधार किया है । मानवजीवन को खुशहाल बनाने में अतंरिक्ष विज्ञान ने अहम् भूमिका अदा की है। अंतरिक्ष विज्ञान के अनुप्रयोगों में उपग्रहों से मौसम की जानकारी दूरसंचार, दूरदर्शन, तार रहित संचार इत्यादि संभव हुआ है ।

मनुष्य जीवन में प्राकृतिक आपदाएं आती रहती है जो भयावह होती हैं और इससे काफी जान-माल की हानि होती है । उदाहरण के लिए अतिवृष्टि को ले, इससे उस भूभाग का संपर्क टूट सकता है, जलवृष्टि से जान-माल की हानि हो सकती है । अंतरिक्ष विज्ञान का उपयोग इस प्राकृतिक आपदा प्रबंधन में अच्छी तरह से हो सकता है । मौसम की जानकारी के मद्देनजर निचले इलाकों को समय रहते खाली कर सकते है । लोग एवं मवेशी को हटाया जा सकता है। दुर्गम और कठीन रास्तों में फंसे लोगों को दूरसंचार से सूचना दी जा सकती है और उपग्रह आधारित संचार व्यवस्था से उन्हें सुरक्षित किया जा सकता है । अंतरिक्ष आधारित आपदा प्रबंधन ज्यादा कारगर सिद्ध होता है क्योंकि बाकी के आधारभूत साधन अवरूद्ध हो जाते है या काम करना बंद कर देते है ।

भूकंप भी प्राकृतिक आपदा है । इससे उसकी तीव्रता के आधार पर दूरसंचार (परम्परागत), दूरदर्शन इत्यादि ठप्प हो जाता है । इससे राहत कार्यों के लिए उपग्रह आधारित संचार व्यवस्था प्रमुख भूमिका अदा करती है ।

समुद्र में जाने वाले मछुवारों के लिए उपग्रह आधारित संचार व्यवस्था वरदान सिद्ध हुई है। दूढों एवं बचावों नीतभार से उन्हें इस बात / संदेश का अनुमान रहता है कि डूबने की स्थिति में उपग्रह आधारित संचार व्यवस्था उनकी मदद कर सकती है ।

समुद्र में दस्युओं के हमले के समय भी यह विज्ञान मदद करता है ।

प्राकृतिक आपदा में सूखा पड़ना भी महत्वपूर्ण है । इससे मौसम के मिजाज के अनुसार कृषकों को उचित जानकारी दी सकती है । इससे वे अपने बीज का अपव्यय रोककर उस हिसाब से बुआई कर सकते है ।

प्राकृतिक आपदा प्रबंधन में मनुष्य जाति को अंतरिक्ष विज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है । बाढ़, भूकंप, सूखा, भूस्खलन इत्यादि में उपग्रह आधारित संचार व्यवस्था, सूचना तंत्र से जानहानि को रोका जा सकता है ।

फसलों पर बीमारी का आक्रमण अनुमान से उपग्रह आधारित सूचना से समय रहते उपाय किए जा सकते हैं । समुद्री तूफानों की जानकारी हासिल की जा सकती है । आज उन्नत उपग्रहों से सेटेलाईट फोन के जरिए विश्व के एक कोने से दूसरे कोने तक संचार रखना है इससे प्राकृतिक आपदा के समय मदद शीघ्र पहुँच सकती है।

कई बार जंगलों में आग लग जाती है जिसको उपग्रह आधारित सूचना से आग बुझाने का प्रबंध किया जा सकता है ।

बाढ़ की स्थिति में जब एक स्थान से दूसरे स्थान के लिए पानी छोड़ा जाता है तो उपग्रह आधारित मानचित्र से उन शहरों और कस्बों में पानी के स्तर का अनुमान लगाया जा सकता है ।

वास्तव में उपग्रह आधारित संचार व्यवस्था, मानचित्रीकरण, दूर संवेदन, मौसम का पूर्वानुमान करने से प्राकृतिक आपदाओं से निपटा जा सकता है और कठिनतम परिस्थितियों में जानहानि को कम किया जा सकता है । यह मानवजाति के लिए वरदान सिद्ध हुई है । आवश्यकता है कि इस तंत्र को जन-जन तक पहुँचाया जाए और उपग्रह आधारित सूचना का महत्व समझ कर उसके अनुप्रयोगों को और विकसित किया जाए ।

भारतीय समाज और भ्रष्टाचार

चंद्रप्रकाश सिंह
वैज्ञा./अभि.

प्रस्तावना : भारतीय समाज प्राचीन काल से अपने विकसित सामाजिक ढाँचे और आध्यात्म के लिए जाना जा रहा है ; हाँलाकि आजकल भारतीय समाज में कई क्षयकारी घटनाएं हो रही है, जिसके फलस्वरूप विश्व में भारतीय समाज की छवि धूमिल होती जा रही है। भ्रष्टाचार भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग होता जा रहा है । अगर हम ऐसा कहें कि भ्रष्टाचार भारतीय समाज के DNA (आनुवांशिक इकाई) का भाग बन चुका है । तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । ऐसा तो हर्गिज नहीं है कि भ्रष्टाचार कभी भी भारतीय समाज में नहीं रहा, लेकिन आजादी से अब तक के भारतीय समाज में भ्रष्टाचार का स्वरूप, प्रकृति एवं विभिन्न सामाजिक अंगों में पैठ अत्याधिक मात्रा में बढ़ रहा है और सिर्फ बढ़ा ही नहीं है बल्कि इसकी स्वीकृति भी समाज में मिल चुकी है । अब घूस देना और अपना काम करवा लेना एक पंरपरा है कोई आत्मग्लानि नहीं । समाज में भ्रष्ट व्यक्ति की इज्जत ज्यादा हो रही है और ईमानदार व्यक्ति हाशिए पर खड़ा नजर आता है ।

आजादी के छः दशकों के बाद के आंकड़ों पर एक नजर डालें तो हम पाएंगे कि हमारी देश की जनसंख्या 110 करोड़ हो चुकी है, हमारा सकल घरेलू उत्पाद (GDP) $ 3.63 Trillion (ट्रिलियन) है, कुल 211 मिलियन की आबादी के पास खाने के लिए अच्छा खाना नहीं है और वे कुपोषण के शिकार हैं, कुल 300 मिलियन की आबादी के पास $ 1 (रु. 50/-) से कम की आमदनी (दैनिक) खड़ें हैं और अंत में भ्रष्टाचार के बढ़ते क्रम में हम 84वें नंबर पर है हां (कुल 180 देशों में , वर्ष 2009 के आंकड़ों के हिसाब से :स्त्रोत : (Transprency international) इन आंकड़ों में कुछ धनात्मक पहलू भी छुपे हुए हैं; जैसे कि हमारे पास

110 करोड़ दिमाग हैं और 110 करोड़ जोड़ी हाथ हैं, तो और इनमें से आधी से ज्यादा जनसंख्या जवान है। अमेरिका जैसा देश जिसकी कुल आबादी 300 मिलियन की है; विकसित देशों में सुमार होता है । हमारे पास इतनी खनिज संपदा, भू-भाग एवं तटीय इलाकों के बावजूद इन छः दशकों में हम अभी भी विकसित देशों की श्रेणी में नहीं आ पाए हैं । देश के विकास में लगे हर एक रुपए का 25 पैसा तो भ्रष्टाचार के माध्यम से काल धन का रूप धारण कर लेता है । अगर हमें भ्रष्टाचार का उन्मूलन भारत से करना है तो इसकी जड़ को उखाड़ना होगा, और भ्रष्टाचार की जड़ और कहीं नहीं हमारे समाज में ही बैठी हुई है।

भ्रष्टाचार के प्रकार : भारतीय समाज से ही राजनितिज्ञ, डॉक्टर, प्रबंधकर्ता एवं समाज के अन्य कार्यवाहक अंगों में कार्यरत लोग आते हैं । अगर हमारे समाज में ही विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचारों को हम गलत नही मानते, तो फिर हम कैसे उम्मीद कर सकते हैं कि भारत से भ्रष्टाचार का उन्मूलन हो सकता है । अत : यह समझना जरूरी हो जाता है कि किन प्रकारों के भ्रष्टाचार में भारतीय समाज लिप्त हैं ।

(1) सामाजिक कुरीतियाँ : हमारे समाज में दहेज नामक एक भ्रष्टाचार का उपकरण मौजूद है, जिसका इस्तेमाल हम अपने रिवाजों का हवाला दे कर बेधड़क हो कर के करते हैं।

(2) शिक्षा में भ्रष्ट्राचार :कई बार माता-पिता बच्चों के अध्ययन के बारे में इतने चिंतित होते हैं कि गलत-सही की मर्यादा समाप्त करके, अध्यापकों से साँठ-गाँठ और पैसों के आदान-प्रदान से नंबर बढ़वाते हैं, या दाखिले के लिए डोनेशन के नाम पर घूस देते हैं।

(3) अन्य क्षेत्रों में भ्रष्टाचार : आजकल तो मंदिरों में पहली पंक्ति में लाने के लिए, किसी सुगम संगीत संध्या में जाने के लिए, किसी ऊँचे क्लब की सदस्यता पाने के लिए या अन्य विलासिता की सामग्रियों को पाने के लिए भी जोड़-तोड़ एवं भ्रष्टाचार का सहारा लिया जाता है ।

भ्रष्ट्राचार के कारण एवं निवारण : भ्रष्ट्राचार का प्रमुख कारण गरीबी है, ऐसा बहुमत से माना गया है लेकिन ज्यादातर यह भी पाया गया है कि एक बार भ्रष्टाचार की लत पड़ जाए तो अमीर बनने की ललक लग जाती है । अगर हमें गरीबी से निजात पाना है तो भ्रष्टाचार से पहले निजात पाना होगा । भ्रष्टाचार के विभिन्न कारणों में मूल्यों का ह्लास एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारण है, दूसरे नंबर पर आता है, उचित दंड एवं सामाजिक बहिष्कार की कमी । मूल्यों का ह्लास तो लोगों में जागरूक्ता ला करके कुछ हद तक पूरा किया जा सकता है, लेकिन उचित दंड के लिए प्रावधान बहुत ही जरूरी है । हमारे पड़ोसी देश चीन में भ्रष्ट अधिकारियों को फांसी की सजा को मानवीय नहीं मानते हैं तो कम से कम हम भ्रष्टाचार में

लिप्त व्यक्ति एवं उससे संबंधित परिवारों को तो समाज से बहिष्कृत कर के एक उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं ।

उपसंहार : भारतीय समाज के उत्थान में भ्रष्टाचार बाधक है, अत : भारतीय समाज को अपने विचारों में परिवर्तन लाते हुए भ्रष्टाचार के खिलाफ एक मुहिम छेड़नी पड़ेगी, अन्यथा बहुत देर हो चुकी है और देरी भारतीय समाज को अब विधायिका, राजनीति एवं कार्यपालिका को दिशा देने के लिए स्वयं को भ्रष्टाचार से सर्वप्रथम मुक्त करके दिखाना होगा ।

भारत में राष्ट्र मंडल खेलों का आयोजन

अमिय विश्वास

वैज्ञा./अभि.

राष्ट्रमंडल खेलों का 19वां आयोजन 3 से 14 अक्तूबर 2010 को भारत की राजधानी में किया गया है। इन खेलों में लगभग 70 देशों के प्रतिभागी 17 प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेंगे । दिल्ली राष्ट्रमंडल खेलों में विकलांगो के लिए भी 4 प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया गया था। राष्ट्रमंडल खेलों का शुभारंभ दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम से किया गया था ।

राष्ट्रमंडल खेलों का इतिहास सन् 1928 से शुरू हुआ था । रिवरेंड एश्ले कपूर ने सर्वप्रथम इन लेखों के आयोजन के बारे में सुझाव दिया था । उनका मानना था कि इन खेलों के आयोजन से ब्रिटिश साम्राज्य की हुकमत को और सम्मान मिलेगा । कनाडियन ऐथलिट राबर्ट स्टिवेन्सन को प्रथम राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन करने का कार्य सौंपा गया था । प्रथम राष्ट्रमंडल खेल कनाडा के एंटोरियो में स्थित हैमिल्टन शहर में हुआ था । इनमें 11 देशों से 400 से अधिक एथलिटों ने भाग लिया था ।

2010 का राष्ट्रमंडल खेल इस तरह का 19 वां आयोजन था । सन् 1976 के बाद इन खेलों का स्थायी नाम राष्ट्रमंडल खेल कर दिया गया । भारत एशिया में राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन करने वाला दूसरा देश है । इससे पहले सन् 1988 में मलेशिया के कुआलालमपुर शहर में एशिया में पहली बार इनका आयोजन किया गया था । विकासशील देशों में भारत के यह खेल तीसरी बार आयोजन किया । सन् 1966 में जमैका इन खेलों का गवाह रहा है।

राष्ट्रमंडल खेलों की अधिकाधिक शुरुआत क्वीन्स बैटन रिले से होती है । 2010 के राष्ट्रमंडल खेल के क्वीन्स बैटन रिले की शुरूआत 29 अक्तूबर 2009 में हुई जब ब्रिटेन की महारानी एलीजाबेथ द्वितीय न यह बैटन भारतीय ओलम्पिक स्वर्ण पदक विजेता अभिनव बिंद्रा को थमाई थी । क्वीन्स बैटन रिले की शुरूआत सन् 1951 में कार्डिक शहर से हुई थी। 2010 का

बैटन एक कला और अभियांत्रिकी का मिश्रण है । यह बैटन ने कला और आगे से इसने हेलिक्ष का रूप ले लिया है । इसमें भारत के हर राज्य की मिट्टी का लेप भी लगा हुआ है । करीब 340 दिन की सफर के बाद बैटन 3 अक्टूबर 2010 को दिल्ली के जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम पहुँची थी । 70 देशों का भ्रमण करने के बाद इसे दिल्ली में ब्रिटेन की महारानी के प्रतिनिधि को सौंप दिया गया । बैटन में ब्रिटेन की महारानी का संदेश रखा गया था, जो 3 अक्तूबर 2010 को खोला गया और सबको सुनाया गया । इसी क्षण से 2010 के राष्ट्रमंडल खेलों की शुरूआत हो गई ।

2010 के राष्ट्रमंडल खेलों में करीब 70 देशों के प्रतिभागियों ने भाग लेंगे । राष्ट्रमंडल के अंतर्गत 53 देशों के अलावा, ब्रिटेन, ब्रिटेन डिपेन्डेन्सीज़ तथा ब्रिटेन साम्राज्य के घटक देशों ने भी भाग लिया । भारत का यह ऐसा तीसरा आयोजन था, इससे पहले भारत ने सन् 1951 एवं सन् 1982 में एशियाई खेलों का आयोजन किया था । यह खेल राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास का सबसे मंहगा खेल भी था ।

2010 के राष्ट्रमंडल खेलों का शुभंकर "शेरा" है , जोकि भारत का जाना पहचाना बाघ है, "शेरा" साहस और अनुग्रह का प्रतीक है और खिलाड़ियों का अपने पूरे दम से उत्साहवर्द्धन करता था । 2010 के "राष्ट्रमंडल खेलों का टागलाईन कम आऊट एंड प्ले" है जिसका मतलब है कि "आइए साथ मिलकर खेले । यह विभिन्न देशों के प्रतिभागियों को मिलजुलकर एक दूसरे की सभ्यता को देखकर, प्रतिस्पर्धाओं में अच्छा करने को प्रोत्साहित करता था । इन खेलों का प्रतीक चिन्ह चक्राकार हैं, जिसमें से मानव की उंगलियों चक्र के आकार से बाहर निकलती है । यह जन-जन के लिए संदेश है कि वह अपनी पूरी समर्थता से ये खेल सफल करें ।

2010 के राष्ट्रमंडल खेल कई विवादों के बीच भी घिरे हुए हैं । भारतीय ओलंपिक संगठन के उप प्रधान माननीय रंधीर सिंह ने बताया कि करीब दो तिहाई काम समयानुसार नहीं चल रहे। इसलिए भारतीय सरकार ने एक अलग समिति राष्ट्मंडल खेलों की देखरेख के लिए बनाई । भारतीय ओलंपिक संगठन के प्रधान श्रीमान कलमाडी को इसका अध्यक्ष बनाया गया। देश के आलावा राष्ट्रमंडल खेलों पर भ्रष्टाचार का भी आरोप है । यह बताया जाता है कि खेलों के कंट्राक्ट देने के संबंध में आयोजकों ने काफी पैसे बटोरें । राष्ट्रमंडल खेलों के आयोजन करने के लिए मजदूरों को ठीक से मज़दूरी भी नहीं दी गई । 100 से अधिक मज़दूर इन खेमे काम करते हुए मारे गए, पर किसी को भी एक पैसे का मुआवजा अब तक नहीं मिला है । कई गरीब जनता को बेघर कर दिया गया है । इसी कारण कई कई देशों और महानुभावों ने इन खेलों को बहिष्कार करने की बात की है । माननीय मनी शंकर अय्यर ने तो इतना भी कहा कि वह खेलों की असफलता से खुश होंगे । दिल्ली में राष्ट्रमंडल खेलों का आयोजन करने के उपलक्ष्य में रु. 26000 करोड़ से भी ऊपर खर्च हुआ होगा । लोगों का कहना है कि भारत में 70 प्रतिशत से भी अधिक जनता गरीब है और यह पैसे

उनकी प्रगति के लिए प्रयोग करना चाहिए । कई खिलाड़ियों ने आंतकवाद के खतरों को देखकर इनमें भाग लेने से मना कर दिया । इन विवादों के बावजूद, दिल्ली का राष्ट्रमंडल खेल सही समय पर आरंभ हुआ ।

हम भारतवासियों को इन खेलों का पूरा समर्थन करना चाहिए। माना कि इस बार खेलों के आयोजन के पहले काफी कमी पायी गयी फिर भी हमें देखना और समझना चाहिए कि ऐसे महाआयोजन कभी कभी ही करने को मिलते हैं । हमें इन खेलों की खामियों से शिक्षा लेकर आगे बढ़ना होगा । भारत में हुनर की कमी नहीं है ।

कल की बेटी

उर्वी पोपट
वैज्ञा/अभि.

कल की बेटी आज बहू बन गई,
मायके में कल ऐशो आराम में रहती ।
ससुराल में आज सेवा करती हो गई ।।

कल जिन्स पहनती
आज साड़ी पहनती हो गई ।
मायके में बहती वो चंचल नदी ।
ससुराल में धीर-गंभीर हो गई ।।

रोज़ खुले हाथों से पैसे खर्च करती,
आज सब्जी के दाम करती हो गई ।
कल स्कूटी फुल-स्पीड में चलाती
आज बाइक की पिछली सीट पे
बैठती हो गई ।।
कल तक तीन टाइम बिन्दास खाती
आज तीन टाइम खाना बनाती हो गई ।
हमेशा खुद की मनमानी करती,
आज पति का कहा करती हो गई ।।

माँ के पास काम कराती
आज सासु-माँ का काम करती हो गई ।
बहन के साथ लड़ती झगडती

आज ननद का कहा-करती हो गई ।।

भाभी का मज़ाक करती,
आज जेठानी को सम्मान देती हो गई,
पिता की आँख का पानी
आज ससुर को ग्लास का पानी देती हो गई ।।

फिर भी पिता कहते हैं,
"वाह" हमारी आँख का रतन,
हमारी "लाडो" बेटी
ससुराल में जाके सुखी हो गई

वार करो

देवांग मांकड
वैज्ञा/अभि.

सुबह-सुबह हाथ में आया एक ताज़ा अखबार
बड़े काले अक्षरों में मुद्रित थे ये समाचार
फिर बम धमाकों से देश का एक बड़ा शहर दहला,
दस दिनों बाद हुआ यह हमला पहला...

दस दिनों तक कुछ न हुआ, यह क्या कम है ?
अरे मनवा, तुझे फिर किस बात का गम है ?
तू न हो उदास यार, तू क्यों खिन्न है ?
हमारे लिए यह बात कहाँ ROUTINE से भिन्न है ?..

खैर, धमाकों से आ गई थी हरकत में सरकार
जारी कर दिए धमाधम, कर दिए Statement भी दो चार..
इस काम में उन्हें संगणक बहुत काम आया,
दस दिन पहले का ही निवेदन, केवल दिनांक
परिवर्तित कर चिपकाया...

(सरकार) आतंकी हमले से हम नहीं डरनेवाले
(प्रजा) अगला हमला न हो, उसके लिए क्या करनेवाले ?
हमले की Pattern से लगता है, विदेशी हाथ का साया है ।
भूल गए, यह बहाना तो दस दिन पहले ही आपने बनाया है ..
यह हमला हमारी सार्वभौमिकता और अखंडितता पर खतरा है ।
क्या आपके लिए एक समान, पानी की बूँद और हमारे खून का कतरा है ?
हम हैं आपकी हिम्मत देखने को बेकरार..
दे दो फाँसी कसाब को, बीच-चौराहे, भर बाज़ार..

अफ़जल हमारा गुरु नहीं, इस बात का मर्म तो समझो..
आतंकियों को मार गिराओं, थोड़ा-सा राजधर्म तो समझो..
पड़ोसी देश से प्रेम की सगाई कर,
ना बढ़ाओं हमारे दिल पर भार...
ऐसे व्यवहार से तो लगता है,
तुम न हो पुरूष और न हो नार...

सीने को कर के चौड़ा, इन दुष्टों को ललकार करो...
मुट्ठियों में भर के ताकत, आतंक की रग पर वार करो...
घूसकर आतंकी शिविरों में इस डर का संहार करो...
पलट कर एक बार तो, इन राक्षसों पर वार करों...

गंदा नाला

निरिक्षा वार्ष्णेय
पत्नीः जितेन्द्र कुमार
वैज्ञा./अभि.

उतरी ही थी बस से अभी,
और दौडती हुई नजर से,
उसने बस स्टेण्ड को देखा,

कुछ मामूली से लोगों की,
आंशिक चहल-पहल थी,

फिर वह मुख्य सड़क पर आ गयी,
दायें-बायें जो दौड़ायी नजरें तो,
सिर्फ विरानगी ही नजर आयी ।

पार कर सड़क को,
जो बाजार से गुजरती थी,
बायीं ओर चलने लगी ।

सभी ने उसे ताड़ कर,
अपनी मैली नजरों को,
कुछ सुकून दिया ।

चाहे हों ये आठ की कच्ची उमर के,
या अस्सी के ढ़लते ।

आफिस था उसका,
बाजार के उस पार,
स्टेशन से उतर कर,
वह चलती रही-चलती रही,
गंदी-गंदी आवाजों के छीटें,
कर्ण-पटल से टकराते रहे,

"तुम पर बलिहारी जाऊँ",
टर्राकर एक बोने ने,
अपने मन को राहत दी,
ले गई सुबह-सुबह,
कलेजा निकालकर,
रेहडीवाले ने कछुवे की तरह,
गरदन बाहर निकालकर
अपनी भड़ास निकाली ।

बस फिर क्या था,
ऐसी न जाने कितनी,
नंगी-नंगी आवाजों की,
बाढ़-सी आ गयी ।

संभालकर दुपट्‌टा अपना,
उसी गंतव्य की ओर,
निरंतर बढ़ती रही-बढ़ती रही ।

देखते ही देखते,
इस बत्तख-सी गरदन वाली ने,
रोज की तरह आज भी,
गंदा नाला पार कर ही लिया ।

अब वह तैयार थी,

अपनी नई भूमिका हेतु,
और साथ ही,
झेलने को पुनः वही,
नंगी-नंगी आवाजें,
जो अब राहजनों को नहीं,
उसके सहकर्मियों की होगीं ।

नारी जीवन

जितेन्द्र कुमार
वैज्ञा./अभि.

नारी तुम हो कितनी महान,
शालीनता-सादगी,
और सहनशीलता,
की सच्ची मिसाल ।

बचपन से ही झेले,
कष्ट-उपेक्षा-भेदभाव,
बनकर के बेटी,
आती तुम जब गर्भ में,
कर दे या तो गर्भपात,
या झेलो फिर फटकार ।

भगिनी का जो रूप तुम्हारा,
छीने तेरा बचपन सारा,
समेटें यादें अदभुत, मन में,
करो पराया बाबुल का अंगना ।

बनकर अर्धांगिनी पति की अपनी,
बहुरूप स्वीकारो फिर तुम
दहेज के लोभी, यहाँ पर तुमको,

देतें पल-पल अनेक यातना ।

माँ के रूप में मिलता तुमको,
नौ माह तक का कष्ट कठोर,
और करो न्यौछावर ममता, अद्भुत
देकर हर क्षण आशिष असीम ।

होती जब ये सन्तान बड़ी
वो भी तेरा कष्ट न समझे,
आता जब फिर समय कठोर,
सन्तान भी तेरी,
तुझे दुत्कारे ।

इतने पर भी उफ् नहीं करती,
सदैव दुआ ही मन से देती ।
हर रिश्ता तेरी मजबूरी,
नारी, तेरी ये कौम अनोखी ।

हे ! खुदा ! करके अन्तर इतना ज्यादा,
क्यों तूने नारी को बनाया ?

सारे दुःख हिस्से में तेरे,
फिर तनिक द्वेष नहीं मन में तेरे ।

औरत में है सदैव ही ममता,
नयनों में है नीर की धार ।

सदैव रहे व्यथित जीवन तेरा,
कितना निर्मल मन है तेरा ।
सच में तू है कितनी महान,
मैं करता तुम्हें कोटि प्रणाम ।

<u>चुटकुला</u>

वकील (अपराधी से) - चाकू पर तुम्हारी उंगलियो के निशान पाए गए हैं। खून तुमने ही किया है।

इस पर अपराधी बोला, वकील साहब आप ऐसा कैसे कह सकते हैं कि चाकू पर मेरी उंगलियो के निशान पाए गए हैं? क्योकि खून करते समय मैंने तो दस्ताने पहन रखे थे ।

<u>वनवास</u>

अमर ज्योति
सहायक

सास बहुत ध्यान से राम वनवास की कथा सुन रही थी,
बहू कथा की ब्यथा मन ही मन गुन रही थी,
सास ने पूछा-
बहू! जब राजमहल का सुख था सीता के पास तो फिर सीता क्यों चली गयी बनवास?
बहू बोली-
स्वाभाविक है, यह किस्सा भी सच्चा है,
परन्तु जिस राजमहल में तीन-तीन सासु हो, उससे जंगल का कष्ट अच्छा है ।

<u>मंत्री</u>

मंत्री जी ने दांत के डॉक्टर से कहा-
मेरा आर्डर ले लीजिए प्लीज मेरे लिए दांत के दो सेट बना दीजिए ।
डॉक्टर बोला- ऐ मेरे माई-बाप, दांतों के दो सेट क्या करेंगे आप?
उत्तर मिला-
राजनीती का मतलब तुम्हे आएगा,
एक खाने का, दूसरा दिखाने के काम आयेगा ।

<u>रामराज्य</u>

वह बैठा मंदिर के द्वार पर भगवान से कर रहा था मनुहार-
भगवान इस देश को बस ऐसे ही चलाना गलती से भी रामराज्य नहीं लाना ।
किसी ने टोका लगता है तू महाभ्रष्ट है,
भला रामराज्य से तुम्हे क्या कष्ट है?
वह बोला-
मै भूखों मर जाऊंगा श्रीमान्.......
क्योकि मेरी है ताला-चाभी की दुकान ।

मोबाइल

ताराचंद कुहाड
कनिष्ठ अभियंता

आज का मानवी मोबाइल हो गया है
सामने कौन है ? यह देखकर मोबाइल
रिसीव करता हो गया है ।

स्वार्थ के चश्मे पहनकर, संबंधों को भी
स्वीच ऑफ करता हो गया है,
अहमदाबाद में होकर भी, "सूरत में हूँ" कहने लग गया है ।

फायदे को देखते हुए आज रिलांयस तो,
कल एयरटेल करता हो गया है,
सगे संबंधी और मित्रों को बदलता हो गया है ।

इनकमिंग और आउटगोइंग के चक्कर में,
फेमिली के कवरेज से बाहर हो गया है,
कुछ रुपये मिलते ही कोलरट्यून डालता हो गया है ।

दो-दो मोबाइल रखकर दो मुँह की बातें
करने लग गया है,
जिसे पहचानता भी न था, उसका अंगत हो गया है ।

नये संबंध के खेल खेलते हो गया है,

कुछ देर की मज़ाक के लिए झूठ बोलता हो गया है ।

मोबाइल से लेन्डलाइन पर फ्री बात करता हो गया है,
आमने-सामने मिलने के बदले मोबाइल पर ही मुलाकात करता हो गया है ।

रात की नींद छोडकर, नाइट कॉलिंग
फ्री करता हो गया है,
फोन में दो सीम कार्ड रखकर,
घरवाली और बाहर वाली रखता हो गया है ।

मानवी ही मोबाइल हो गया है,
भाई मोबाइल हो गया है ।

आतंकवाद

डॉ. अरविन्द सहाय
वैज्ञा./अभि.

जल रहा है कश्मीर कोई तो आग बुझा दे,
जलते हुए लोगों के दर्द को कोई तो शीतल हवा दे ।
लोग जलें, लोग कटें, लोग मरें पर किसी निरीह को कोई तो बचा लें,
कश्मीर की वादियों में लगे खून के धब्बों को कोई तो मिटा दें,
कश्मीर और देश के अमन-चैन को कोई तो लौटा दें ।।

कभी मुम्बई, कभी अहमदाबाद, कभी हैदराबाद, कभी बनारस,
बम विस्फोटों की दहशत से सहमा हुआ ये मानस;
नहीं फूटने देंगे बमों पे बम;
आतंकवादियों के हौसलों को पस्त करेंगे हम
आतंकवादियों को नहीं लेने देंगे इस देश में अब दम ।।
बम या दंगों की कोई जात, कोई धर्म, कोई ईमान नहीं होता,
बम या दंगे करने वाला, असल में इंसान नहीं होता ।
उनसे पूछो जिनके कि घरो के चूल्हे बुझे हुए हैं,
जो इस दहशतगर्दी का शिकार हुए हैं,

वो हिन्दू हैं या मुस्लिम, वो सिक्ख हैं या ईसाई –
उनका धर्म, उनकी जात कोई तो बता दो मेरे भाई ।
कोई कौम, कोई मजहब, कोई सरहद नहीं तो बतायेंगे,
बस आतंकवाद के भयावह चेहरे का नाम वो चिल्लायेंगे ।।

उनसे पूछो जिनके अपनों का गोलियाँ निशाना बनी;
जिनके अपनों के मरने का गोलियाँ बहाना बनी;
जिनके अपने आग के हवाले चढ़ गए;
जिनके अपने कुछ दहशतगर्दों का शिकार बन गये ।।
जिनके अपने इतने दूर हुए कि हार के दीये की रोशनी भी उन्हें ढूँढ न पाई ।
घरों के चिराग तो जले पर इक रोटी भी न पक पाई ।।
आओ फिर एक क्रांतिदीप जला दें, इस क्रांति को आगे बढ़ा दें,
इस बार अंग्रेजों से नहीं, आतंकवाद से लड़ाई है,
इस बार अंग्रेजों ने नहीं, आतंकवाद ने की चढ़ाई है,
पर इस चढ़ाई का मुँहतोड़ जवाब देंगे हम,
खानी है कसम, इस बार नहीं गिरेंगे हम ।
समाज के मुखोटों को पहचानेंगे हम,
कर देंगे उनकी नाक में हम इस बार दम ।।

कसाब को अब और रोटियाँ नहीं खिलानी,
"अतिथि देवो भव" की परम्परा अब नहीं निभानी;
अज़हर मसूद को भी है शूली पर चढ़ाना,
संसद पर और नहीं है, हमला करवाना ।
अपने बीच छुपे हुए आतंकियों को निकाल फेंको
समाज में सफेद चेहरा लगा दे जेहादियों को निकाल फेंकों
कोई मजहब, कोई ईमान, कोई देश नहीं इनका
बस लोग जले, लोग कटें, ये उद्देश्य है इनका
सरहदें तो सिर्फ इक बहाना है,
हिंदुस्तान, पाकिस्तान, अमेरिका इनका निशाना है
कभी मज़हब, कभी जात, कभी धर्म;
कभी जीसस, कभी भगवान, कभी कुरान
आतंकवाद की बढ़ती इस दुकान को आओ अब जला दें
कभी मजहब, कभी देश के नाम दंगा करने वालों को
अब मौत की नींद सुला दे ।

क्यूं, क्यूंकि इस आग में जलता इक इंसान है,
क्यूं, क्यूंकि इस आग में पलता इक हैवान है;
क्यूं, क्यूंकि इस आग में बसता इक शैतान है ।
आओ इस शैतान की हैवानियत को मिटा दें,
शैतान को इंसान बनने का सबक तो सिखा दें,
कसाब और मसूद जैसे लोगों को अब न पनाह दें;
इस दुनिया को इंसानियत से सुंदर बना दें,
इस दुनिया को इंसानियत से सुंदर बना दें ।।

मेरी प्रकृति मेरा जीवन

नीतू
वैज्ञा./अभि.

ये मेरी प्रकृति, मेरी प्यारी प्रकृति
इसे छेड़ो ना इसे छेड़ो ना ।

विकास और सशक्तिकरण के नाम पर
इसे बिल्कुल तुम दूषित करो ना
करो ना इसके नियम का पालन तो
इसके कहर को पड़ेगा सबको सहना
प्रकृति ने दिया है सबको जीवन
इसके नियमों को कोई भेद पाया ना

ये मेरी प्रकृति मेरी प्यारी प्रकृति
इसे छेड़ो ना इसे छेड़ो ना ।

अगर रोक ना सको बादल का गरजना
अगर रोक ना सको सुबह-शाम का होना
अगर रोक ना सको सूरज का निकलना
अगर रोक ना सको बिजली का चमकना
तो इन्सान कैसे कहला पायेगा ईश्वर

ढूंढोगे फिर से वो ही परमेश्वर

ये मेरी प्रकृति मेरी प्यारी प्रकृति
इसे छेड़ो ना इसे छेड़ो ना ।

फिर बंद करो ये छेड़छाड़
उसके अस्तित्व से खिलवाड़
उद्योग तो जरूरी है माना
जरूरी तो है सांस का लेना भी
बंद ना किया वनों का काटना
शवों को मिलेगी इलैक्ट्रिक कब्र
प्रकृति ने दिया सबको जीवन
उसमें ही मिल जाने दो अब

ये मेरी प्रकृति मेरी प्यारी प्रकृति
इसे छेड़ो ना इसे छेड़ो ना ।

बेटी

कृति खत्री
वैज्ञा./अभि.

एक छोटी, नन्हीं परी का था इंतज़ार
मन में थे मेरे सपने हज़ार ।
कब खोल आँखें देखेगी मुझे पहली बार
जिसके सहारे करूँगी अपने अधूरे सपने साकार ।

कब पुकारेगी मुझको वह पहली बार
सोच-सोच कर मन होता था बेकरार ।
एक छोटी, नन्हीं परी का था इंतज़ार
मन में थे मेरे सपने हज़ार ।

बस आने वाली थी वो घड़ी जो लाती खुशियाँ बेशुमार,
पर औरतजात के दुश्मनों को था मेरी खुशी से इन्कार ।
जानना था उनको आने वाली है बरबादी या होगा उद्धार
लड़की को माने पनोती पर लड़का है उपहार ।
एक कली थी जो खिलने को तैयार,
समाज के बन्धनों को जिसे करना था पार ।

देख न पाई जो हमारी कुदरत की फुहार,
पुराने विचारों ने जिसका किया संहार ।

उसके जाने से मेरे चेहरे पर अब हंसी नहीं है खिलती,
मुझे सपनों में हमेशा वह है दिखती ।
रोती बिलखती यही सवाल वो पूछती,
क्यों माँ क्या थी मेरी गलती ?
मेरे लिये अगर तू थोड़ा सा भी लड़ती,
तो जिन्दा होती मैं, तेरे साथ इस घर में बसती ।
क्यों माँ, तूने ऐसा क्यों किया,
पढ़ी लिखी हो फिर भी मुझे मार दिया ।
उसके सवालों का नहीं था कोई जवाब
चुप हो जाती थी मेरी यह जुबान ।
अब नहीं सहूँगी यह अत्याचार,
बचाऊँगी बेटियाँ यह लिया है ठान ।
न फिर से हो कोई बेटी कुरबान,
लेती हूँ यह प्रतिज्ञा चाहें चली जाए मेरी जान ।

फिर आने वाली थी वो सुहानी घड़ियाँ
छलक उठी थी मेरे चेहरे पर खुशियाँ ।
पर खुशी के दुश्मनों को पसन्द नहीं था
कि आए घर में परियाँ ।
फिर करनी थी उन्हें वो परख,
शायद दोहराते वही अत्याचार की घड़ियाँ ।
छोड़ दिया ऐसा घर
जहाँ एक समान नहीं है बेटे और बेटियाँ ।

अब खुद कमाकर खुद खाती हूँ
किसी के जुर्म नहीं सहती हूँ ।
महेनत करने मुश्किल घड़ियों
में भी खुश रहती हूँ ।
फिर से वहीं नन्ही परी के
इन्तज़ार में रहती हूँ ।

अभी भी याद है वो दिन
जब नर्स बोली

मुबारक हो बेटियों की टोली ।
एक नहीं दो-दो आई है आपकी झोली ।
रोम-रोम मेरा भर गया खुशी से,
नाच उठा मन खूब ज़ोर से
पूरा हुआ वो वचन,
जो किया था मैंने अपनी मरी हुई बेटी से ।

बस यही है अब प्रार्थना, कि मिले उन्हें सारे सुख
औरतजात के दुश्मन, न दें उन्हें कोई दुःख ।
एक छोटी नन्हीं परी का था इंतजार
अब दो आ गई मेरे द्वार ।

हिन्दी : कल आज और कल

कार्तिक भालसोड़
वैज्ञा./अभि.

हिंदीः पहले सप्ताह, फिर पखवाड़ा आज माह
और शायद कल हो साल ।
फिर भी...
क्या हम उखाड़ पाये हैं, दिलो-दिमाग पर छायी
अंग्रेजों ने बिछायी वो जाल ।..

हिंदी देश की ऊँची शान
जो मुर्दे में फूँके जान,
हिंदी रट लो सुबह-शाम
सब कर लो हिंदी में काम
अब कर लो हिंदी का नाम ...हिंदी रट लो ...

हिंदी बसते जगमें सारे
एक ही भाषा सबको तारे
अपनों की पहचान कराये

राष्ट्र का जो सम्मान बढ़ाये
बड़ा सुंदर ये पैगाम – हिंदी रट लो...

खुद जागे, औरो को जगाये
कदम कोई अब होश उठाये
खुद को टटोले
दिल से बोले
अब छेड़ना है संग्राम...हिंदी रट लो..
जीवन अपना, सोच पराई
ये गुलामी, तूने क्यूँ अपनाई
शक्तिरूप मानुष है जीगर
तीर-धनुष है तेरे भीतर
तेरा कब जागेगा राम...हिंदी रट लो..

संकल्प

प्रणेश कुमार
सहायक
क्रय एवं भंडार

इकतीस दिसंबर का दिन
मंद मंद घड़ियाँ सरक रही हैं,
कुछ खट्टे तो कुछ मीठे पल समेटे,
विदा हो रहा है वर्ष।
मन है किंतु संशय में,
बीते साल की खातिर विषाद मनाऊँ या हर्ष?
चिंतातुर देख मित्रों ने कहा-
भूल जाओ बीता वर्ष,
आओ करें मस्तियाँ छककर,
क्योंकि आ रहा है नव संवत्सर ।
आओ करें संकल्प कि,
बढ़ना है उस पथ पर,
कि जिस पर चलने से
मिल जायेगी मंजिल,

कि जिस पर चलने से,
कभी उदास न हो दिल।
मित्रों की बात गाँठ बाँध,
मैं भी उनमें शरीक हो गया,
बीते साल को बिसारकर,
नव वर्ष के रोमांच में खो गया।
किंतु स्तब्ध रात्रि के सन्नाटे में,
आँख लगने से पहले,
मन में एक प्रश्न कौंधा ।
गत साल भी,
ऐसे ही कुछ संकल्प किये थे प्रथम दिन,
कहाँ गये वो वादे ?
क्या हुए वो इरादे ?
क्यों उनकी फिर हुई जरुरत।
फिर प्रकाश का साया घिर आया,
और दिमाग ने दिल को समझाया ।
असली संकल्प तो है यही,
कि किये संकल्प को भूलें न कभी।

श्रद्धांजलि

डॉ. राहुल निगम
वैज्ञा./अभि.

उसकी विदाई के पल भूल न सका,
कुछ करुणा भरे कुछ आंसू भरे
कसक सी उठती है मेरे मन में,
वेदना भरी आह उठती पल प्रतिपल
ऐसा लगता है जैसे अचानक ही छूट गया,
आज हर किसी से उसका साथ !
उसकी विदाई के पल भूल न सका,
कुछ करुणा भरे कुछ आंसू भरे
वह मिला था मुझे चीख पुकार में ,
अस्पताल के कोलाहल में,
मेरे दर्द में थामा था हाथ मेरा बड़े करुणा से,
दिलासा दिया था उसने अपने दिल से

न भूल पाऊंगा उसका सेवा भाव,
किया था संसार मे ऐसा निस्वार्थ कार्य !
उसकी विदाई के पल भूल न सका, कुछ करुणा भरे कुछ आंसू भरे
मृत शय्या पर लेटे लोगों को दिया था जीवनदान,
मेरे जीवन की नैया भी पहुचा गया पार

नया दौर

देवांग मांकड़
वैज्ञा./अभि.- एसएफ

जहाँ हृदय में कभी, बस रही थी श्रद्धा और आस्था..
आज की स्थिति में अभी, ग्लानि की है पराकाष्ठा...

पुराने समय का हर आदमी, रहता खुश, हर समय, हर प्रहर..
चारों ओर फैला है आज, निराशाओं और विडंबनाओं का शहर..

स्थिति में क्यों आया बदलाव, जीवन में क्यों घट रहा चाव..
कारणों की जाँच में मस्तिष्क का पैडल घुमाया,
विचारों के राजमार्ग पर पहला पड़ाव याद आया..

देखते रहते हैं जो टीवी पर, बिना झुकाए पलक...
यही कार्यक्रम दे जाते हैं, हमारी बिगड़ रही संस्कृति की झलक..

कुछ रियलिटी शो देखकर तो, शर्म से हमारे सर झुक जाते हैं...
अच्छा है ये शो, शादी तक आकर ही रूक जाते हैं...

कमीज और तमीज़, दोनों छोटे हो रहे हैं...
सलवार और तलवार, दोनों खोटे हो रहे हैं...

यह विषम माहौल थोड़ा और बिगड़ता है,
जब इसमें महान नेताओं का झंडा गड़ना है..
ये नेता तो 3 idiots वाले चमत्कारी हैं...
और धन प्राप्त करने में इनकी अनोखी दस्तकारी है...

क्रिकेट के सट्टे में, ये सेटिंग अपनी करते हैं...
Franchisee के साथ मिलकर, शादी और मैच भी ये फिक्स करते हैं...

हमारे भरोसे का ये, असली एनकाउन्टर कर, हम पर हँस जाते हैं,
फर्ज तो निभाने नहीं, शायद तभी फर्जी केस में फँस जाते हैं .....

ये मुश्किलें तो हमारी, अंदरूनी हैं...
और पड़ोसियों से भी हमारी बगिया तो सूनी ही है...
चीन बना है नींच, तो पाक के नापाक इरादे हैं,
हमें विभाजित कर देंगे, दोनों ने किये वादे हैं...

क्या कभी सोचा, इन तूफ़ानों में हम क्यों जकड़े हैं ?..
क्या इसके मूल में, हमारी सहिष्णुता की ही जड़े हैं ?..
हमारी विराट भावनाओं के, लोगों ने गलत अर्थ पकड़े हैं ...
तभी आतंकवादी सोच बैठे हैं, कि हम हीजड़े हैं....

उनकी सोच में लाना हो बदलाव,
तो करना पड़ेगा नीतियों में ठहराव...
तोड़ने होंगे पड़ोसी मुल्क में चल रहे आतंकवादी शिविर,
तभी कहलाएँगे हम सच्चे शूरमा, सच्चे वीर...

लगाएँ कसाब को फाँसी, चौराहे में, बीच बाज़ार...

दुनिया भी देखे, हमारी आक्रमकता का पैना औज़ार...

बदले हमारे भ्रष्ट नेताओं की प्रकृति,
तभी बच पाएगी हमारी संस्कृति...
यही हैं आशाओं की स्वर्णिम किरणों में रची नई भोर,
यही है डर से लड़ने के लिए, आक्रमकता की नई डोर,
यही है जीवन को सही मायने में जीने का नया दौर...

कहानी

वो दिन कभी भुला न पाए

अभिषेक कुणाल
वैज्ञा./अभि.

डॉक्टर भट्ट गोल्फ खेलने जाने के लिए तैयार हो रहे थे । यद्यपि उनकी उम्र साठ साल के ऊपर थी पर उन्होंने नित व्यायाम् क्रीड़ा, योग साधना से खुद को नवयुवकों की भाँति स्वस्थ बना रखा था । उनकी चपलता और स्फूर्ति युवकों को भी लज्जित करती थी । इतने में उन्हें लगा कि कोई बाहर द्वार पर उन्हें पुकार रहा है । उन्होंने अपने नौकर को झिड़कते हुआ कहा – " जाओ बाहर जा कर कह दो कि इस वक्त हम कोई मरीज को नहीं देखते ; यह हमारे गोल्फ खेलने का समय है" । नौकर ने बाहर जाकर देखा कि एक अत्यंत बूढ़ा व्यक्ति एक पालकी के साथ खड़ा है । नौकर को देखते ही बूढ़ा व्यक्ति गुहार लगाते हुए नौकर की तरफ दौड़ा । इतने में डॉक्टर भट्ट भी बाहर आ गए । उन्होंने उस व्यक्ति की तरफ घूरते हुए

बोला – "कल सवेरे आना, "कल सवेरे आना" । शाम के समय हम गोल्फ खेलते हैं"। बूढे व्यक्ति ने सकपकाते हुए बोला "हजूर सात लड़कों में से एक यही लड़का बच रहा है । आप थोड़ा देख लेते तो डॉक्टर भट्ट अपनी कार में बैठते हुए बोले " "कल सवेरे आना" । बूढ़ा निस्तब्ध होकर तब तक कार को देखता रहा जब तक कार नज़रों से ओझल नहीं हो गयी । उसे समझ में नहीं आ रहा था कि बाहर से इतनी रंगीन दिखनी वाली दुनिया इतनी वेदनाहीन क्यो हैं ? वह उन पुराने जमाने के जीवों में था जो किसी की गिरी हुयी छप्पर उठाने, मुर्दे को कंधा देने और संकट में फँसे हुए व्यक्ति की मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं । इस मतलबी संसार का इतना कटु अनुभव उसे कभी नहीं हुआ था । रात को करीब दस बजे बूढे भगत का नौ साल का हँसता खेलता बालक स्वर्ग सिधार गया।

घटना को दो साल बीच चुके है । डॉक्टर भट्ट ने अपनी योग्यता, महेनत से काफी धन और यश कमाया; साथ में अपने स्वास्थ्य की भी रक्षा की, जोकि एक बड़ी बात है । गर्मी की छुट्टियों में उनका बाईस साल का एकलौता लड़का कृष्णा घर आया था । वह भी अपने पिता के समान डॉक्टरी की पढ़ाई कर रहा था और आगे चल कर एक सफल डॉक्टर बनना चाहता था । पूरे घर में हर्षोल्लास का माहौल था । डॉक्टर भट्ट ने अपने बेटे के तेईसवीं जन्मदिन पर भव्य समारोह का आयोजन किया था । कितने सालों के बाद आज उनका बेटा अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य पर घर में था । उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था । चारों तरफ मेहमानों, रिश्तेदारों और दोस्तों का ताँता लगा हुआ था । सब कृष्णा को मुबारकबाद दे रहे थे । आगंतुकों में कृष्णा के कुछ प्रिय मित्र भी थे । कृष्णा रेशमी कुर्ता पहने, नंगे पांव इधर-उधर मेहमानों, दोस्तों की आवभगत में लगा हुआ था। इतने में कृष्णा की एक महिला मित्र ने बोला " कृष्णा तुमने आज तक हमें अपने साँपों को कभी नहीं दिखाया । कृपया आज मुझे दिखा दो । कृष्णा को साँपों को पालने का बेहद शौक था और यही बात डॉक्टर भट्ट को खटकती थी । कृष्णा ने टालने के अंदाज में बोला " मैं तुम्हें कल दिखा दूँगा" । रात के वक्त साँपों को तंग करना उचित नहीं होगा " । इतने में कृष्णा के एक अन्य मित्र ने चुटकी लेते हुए कहा "देखना तो आप बहुत चाहें; पर कोई दिखाएं तो ।" इस पर महिला मित्र सकपका गयी । स्थिति को सम्भालते हुए कृष्णा ने कहा " कोई बात नही चलों मैं अभी साँपों को आप सभी लोगों को दिखा देता हूँ"।

कृष्णा ने अनेक प्रकार के साँप पाल रखे थे । उनमें से एक साँप उठाते हुए कृष्णा बोला " इससे जहरीला साँप मेरे पास नहीं है । इसका काटा पानी भी नहीं माँग सकता है " । इतने में एक मित्र ने कहा "महाशय जरूर आपने इसके जहरीले दाँत तोड़ रखें होंगे" । इतना सुनते ही कृष्णा ने साँप का जबड़ा जोरे से दबाया और सभी लोगों को दिखाते हुए बोला " जिन लोगों को कोई शंका हो, वो इसके जहरीले दाँत देख सकते हैं" । जहरीले दाँत देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए और वापस रखने के लिए कृष्णा ने जैसे है अपनी पकड़ ढीली की,

साँप ने उसकी अँगुली पर पूरी ताकत से काट लिया । साँप को इस तरह अपना अपमान पसंद नहीं आया था ।

चारों तरफ अफरा-तफरी मच गयी । किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था । कृष्णा के लिए खड़े रहना मुश्किल हो गया था । लोगों ने उसे लिटा दिया । चूंकि शहर छोटा था और आस-पास नजदीक में कोई बड़ा अस्पताल नहीं था, डॉक्टर भट्ट रोने लगे । लोगों नें उन्हें सहारा देते हुए, समझा कर बिठाया । इतने में मेहमानों में से एक के मित्र डॉक्टर थे, और जिन्होंने पहले भी इस तरह का इलाज किया हुआ था । फौरन डॉक्टर भगत ने उन्हें अपनी कार भेजकर बुलाया । डॉक्टर ने कृष्णा की नब्ज टटोली। उसका चेहरा नीला पड़ चुका था । काफी देर देखने के बाद डॉक्टर ने कहा अब बहुत देर हो चुकी है । साँप का जहर पूरे शरीर में फैल चुका है । “मैं कुछ नहीं कर सकता” । डॉक्टर भट्ट के पैरों तले जमीन खिसक गई। रोते हुए कहाँ “कोई मेरे बेटे को ठीक कर दें” । मैं अपनी सारी जायदाद उसके नाम कर दूँगा ”।

बहुत सारे डॉक्टर, ओझा, वैद्य आए और कृष्णा को देखकर चले गये । कृष्णा का चेहरा देखकर उन्हें अपने उपचार करने की हिम्मत नहीं हुई । कृष्णा के साँप काटने और डाक्टर भट्ट का अपनी सारी दौलत सौंपने का ऐलान जंगल की आग की तरह चारों और फैल गयी।

बूढा भगत अपनी झोपड़ी में अभी हुक्का पी रहा था । बगल में बूढी सो रही थी। इतनें में किसी ने दरवाजा खटखटाया। दरअसल में गाँव के चौकीदार ने बूढे भगत को यह बात बताने के लिए ही दरवाजा खटखटाया था । भगत स्तब्ध था । उसे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें । एक पल तो उसे खुशी महसूस हुई कि चलो अच्छा ही हुआ । पर दूसरे ही पल उसकी चेतना ने धिक्कारा। बूढा भगत साँपों के जहर तारने की विद्या का ज्ञाता था। अनेक अवसरों पर दूर-दूर गाँवों में जा कर मरे हुए लोगों को उसने जिंदा किया था ।

आखिरकार मन और हृदय की लड़ाई में जीत हृद्य की हुई । बूढा भगत शहर की तरफ चल निकला । बीच-बीच में उसे लगता था कि कहीं बहुत देर तो नहीं हो गयी । भगत दौड़ने लगा । इतना तेज तो उसने अपनी पूरी जिंदगी में नहीं दौड़ा था । डॉक्टर भट्ट के घर पहुँच कर देखा कि चारों तरफ मातम फैला हुआ है । उसने डॉक्टर साहब से पूछा “ बच्चा कहाँ है ?” । डॉक्टर भट्ट निराश हो चुके थे । अब उन्हें कोई आशा नहीं बची थी । फिर भी वे भगत को कृष्णा के पास ले गए । भगत ने एक नजर कृष्णा को देखा और बोले डॉक्टर साहब अभी भी कुछ नही हुआ है । भगवान बहुत बड़ा कारसाज है । मुर्दे को भी जीवित कर सकता है। भगत ने अपने मंत्रों से आखिरकार उसे जीवित कर दिया ।

डॉक्टर भट्ट के लिए यह दिन सच में अविस्मरणीय था ।

चुटकुला

अध्यापक (कक्षा में) - बच्चों बताओ कि दूध को खराब होने से बचाने के लिए क्या करना चाहिए?

सोनू- जी उसे पी लेना चाहिए ।

***

पत्नी का ऊपरी होंठ फट गया। डॉक्टर ने टांके लगाने के 10 रुपये मांगे।

पति ने 20 रुपये का नोट दिया और दोनों होठों पर टांके लगाने को कहकर ऑपरेशन रूम से बाहर आ गया।

योग, क्रियायोग और श्रीश्रीपरमहंस योगानंद

सी.यू. चौहाण
परियोजना वैयक्तिक सहायक

योग युज् धातु से बना है, युज् का अर्थ है जोड़ना, मिलना । मतलब है जीवात्मा का परमात्मा से संयोग-मिलन कराने का विज्ञान । पतंजलि अपने योगसूत्र-1:2 में लिखते हैं योग यानि चित्तवृत्ति निरोधः अर्थ है ।

मनुष्य की चेतना (मानस, बुद्धि, अहंकार) में निरंतर उठने और बैठने वाले विचारों और भावनाओं की लहरों या भंवर को रोकना-नियंत्रित करना या निराकरण करना और जो ईश्वर साक्षात्कार के लिए किसी वैज्ञानिक प्रविधियों का अभ्यास करता हो वही योगी होता है, वह विवाहित भी हो सकता है और अविवाहित भी, सांसारिक जिम्मेदारियों को निभाने वाला भी हो सकता है या विशिष्ट धर्म संप्रदाय से संबंद्ध भी ।

श्रीश्री परमहंस योगानंदजी अपनी पुस्तक "**योगी कथामृत**" मूल अंग्रेजी पुस्तक Autobiography of a Yogi में योग के बारे में ज्यादा विस्तार से लिखते हैं किः

"किसी भी अन्य विज्ञान की तरह ही योग विज्ञान का किसी भी देश और काल के लोगों द्वारा प्रयोग किया जा सकता है। कुछ अज्ञानी लेखकों का यह प्रतिपादन पूर्णतः गलत है कि योग साधना खतरनाक है या पाश्चात्यों के लिए ठीक नहीं है । यह खेद की बात है । इस गलत प्रतिपादन ने योगसाधना के अनेक सच्चे और उत्सुक आकांक्षियों को उसके बहुमुखी लाभ को प्राप्त करने के प्रयास से विमुख कर दिया ।"
आगे लिखते हैं –

"योग साधना विचारों के स्वाभाविक कोलाहल को शांत करने की एक पद्धति है। विचारों का यह कोलाहल सभी देशों के सभी मनुष्यों को समान रूप से लाभदायी है। अधिकांश लोगों के विचार अशांत और चंचल होते हैं, अतः मन-नियंत्रण के विज्ञान योग साधना की आवश्यकता स्पष्ट है ।"

वे आगे भी स्पष्टीकरण देते हैं – प्राचीन ऋषि पतंजलि योग की व्याख्या इस प्रकार करते हैः "चित्त में एक के बाद एक उठती ही रहने वाली लहरों को शांत करना । उनका संक्षिप्त परन्तु अत्यंत ज्ञानयुक्त ग्रन्थ योगसूत्र हिन्दू-षडदर्शन में से एक दर्शन है । पाश्चात्य दर्शनों के विपरीत, हिन्दू षडदर्शन में न केवल सैद्धान्तिक तत्वावलोकन, बल्कि व्यावहारिक प्रणालियों का भी समावेश है । तत्व-मीमांसा में सामने आ सकने वाले प्रत्येक प्रश्न का गहन विचार करने के पश्चात् हिन्दू शास्त्र छः निश्चित मार्ग बताते हैं, जिनका उद्देश्य हमेंशा के लिये दुःख-मुक्त होकर अक्षय आनन्द की प्राप्ति करना है ।

उत्तरकालीन उपनिषद कहते हैं कि छः दर्शनों में से योगसूत्र में ही सत्य की प्रत्यक्ष अनुभूति करने की सबसे प्रभावी पद्धतियाँ हैं । योग की व्यवहारु योग्य प्रविधियों के अभ्यास से मनुष्य कल्पना के बंजर प्रदेश को हमेशा के लिये पीछे छोड़कर परमतत्व की प्रत्यक्ष अनुभूति करता है ।

पतंजलि की योग-पद्धति अष्टांग योग के नाम से जानी जाती है । इसके पहले दो अंग हैं (1) यमः- नैतिक सदाचार – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन; और (2) नियमः- धर्माचरण – शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर-प्रणिधान ।

इसकी अगली सीढ़ियाँ हैं (3) आसन (शरीर की उचित स्थिति); स्थिर-"सुखमासनम्" – मेरुदण्ड सीधा और ध्यान के लिये आरामप्रद अवस्था में निश्चल शरीर; (4) प्राणायाम (सूक्ष्म जीवन-प्रवाह या प्राण पर नियंत्रण); और (5) प्रत्याहार (इंद्रियों को बाह्य विषयों से निवृत्त कर अन्दर वापस मोड़ लेना) ।

आखिरी सीढ़ियाँ योग के प्रत्यक्ष अंग हैं: (6) धारणा (एकाग्रता), मन को एक ही विचार पर एकाग्र रखना; (7) ध्यान; और (8) समाधि (परा चैतन्य का अनुभव) । योग का यह अष्टांग मार्ग साधक को कैवल्य के अंतिम लक्ष्य पर पहुँचा देता है, जिसमें योगी किसी भी बोध शक्ति की पहुँच से परे के सत्य को जान लेता है ।

यह प्रश्न मन में आ सकता है कि, "कौन बड़ा है – स्वामी या योगी ?" जब ईश्वर के साथ एकता स्थापित हो जाती है, तब विभिन्न मार्गों के भेद अपने आप ही समाप्त हो जाते हैं । परन्तु भगवद्गीता में कहा गया है कि योग शास्त्र की पद्धतियाँ सर्वसमावेशक हैं । ये पद्धतियाँ केवल विशिष्ट प्रकार के या विशिष्ट स्वभावगुणों वाले व्यक्तियों, जैसे संन्यस्त जीवन की ओर झुकाव रखने वाले अत्यंत कम लोगों के लिये ही निर्धारित नहीं हैं; योग साधना के लिये किसी विशिष्ट संप्रदाय के साथ औपचारिक तौर पर जुड़े रहना भी आवश्यक नहीं है । योग-विज्ञान उस मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति करता है जो सबके लिये एक समान होती है, अतः यह सबके लिये समान रूप से लागू होता है ।

सच्चा योगी अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए संसार में रह सकता है, वहाँ वह पानी पर तैरते मक्खन की तरह होता है, आसानी से पतला बनाये जा सकने वाले अनुशासनविहीन मानवजाति रूपी दूध की तरह नहीं । यदि मनुष्य अपने अहंकार की इच्छा-वासनाओं में मानसिक रूप से लिप्त न हो और जीवन में अपनी भूमिका को केवल ईश्वर का एक स्वैच्छिक माध्यम बनकर अदा करे, तो सांसारिक कर्तव्यों को निभाने के लिये उसे ईश्वर से अलग होने की आवश्यकता नहीं रहती ।

योग और क्रियायोग का जिन्होंने जगत को दिया उनका छोटा सा परिचय :

श्रीश्री परमहंस योगानंदजी का जन्म 4 जनवरी, 1883 में एक बंगाली परिवार में गोरखपुर में हुआ था । माता-पिता ने उनका नाम मुकुंदलाल घोष रखा था । जन्म के कुछ समय पश्चात् उनकी मां उन्हें अपने महान गुरु श्रीश्री लाहिड़ी महाशय के आर्शीवाद के लिए वाराणसी ले गई – आर्शीवाद देते हुए लाहिड़ी महाशय ने कहा, छोटी मां, तुम्हारा पुत्र एक योगी होगा और एक आध्यात्मिक इंजन की तरह वह अनेकानेक लोगों को ईश्वर के पास ले जाएगा ।

स्वामी श्री युक्तेश्वर गीरीजी के पास पहुंचे । 1914 में 10 वर्षों के आध्यात्मिक प्रशिक्षण के बाद योगानंदजी ने सन्यास का स्वामी पद ग्रहण किया । 1918 में रांची में योगदा सत्संग ब्रह्मचर्य विद्यालय की स्थापना की । तत्पश्चात 1920 में वे स्वामी विवेकानंद की तरह अमरिका में उदारवादियों के विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के प्रतिनिधि के रूप में गए । वे बोस्टन, न्यूयोर्क, फिलोडिल्विया भी गये और अत्यंत उत्साह के साथ उनके व्याख्यानों का लोगों ने स्वागत किया और 1924 में उन्होंने संपूर्ण अमरिका में दौरे करते हुए व्याख्यान दिए ।

सन् 1936 में परम योगी ने योगदा सत्संग सोसायटी ऑफ इंडिया (YSS) को असांप्रदायिक और धर्मार्थ संस्था के रूप में पंजीकृत करवाया ।

आज लाखों साधक क्रिया योग प्रविधि का अभ्यास कर बहुत उन्नत हो रहे हैं । इस लेख का लेखक खुद क्रियावान है यानि क्रिया योग से दीक्षित है ।

क्रिया योग - प्रविधि के अभ्यास से मुझे क्या लाभ हुआ थोड़ा सा बताता हूँ – कुछ बातें नहीं बताऊँगा क्योंकि ऐसा न बताने की हमने शपथ ली है ।

(1) शरीर सम्पूर्ण रोगमुक्त हुआ है ।
(2) यादशक्ति अद्भूत तरीके से बढ़ी है ।
(3) मन नई शांति, नया आनंद और नये-नये प्रेम की लहरों से सदा प्रफुल्लित रहता है ।
(4) पुरानी आदतें छूट गयी है – जैसे आलस, काम करने की अरूचि, ज्यादा नींद लेना आदि ।
(5) खाना कम हुआ है और उल्टा शरीर का वजन बढ़ा है ।
(6) अंग्रेजी का ज्ञान बढ़ा है । कैसे ? मैं YSS का सदस्य बना तब अंग्रेजी में Lessons आते थे आज हिंदी में भी मिलते हैं ।
(7) मेरे 99% निर्णय सही होते हैं क्योंकि मैं शांत रहकर थोड़ी देर ध्यान करने के बाद सही निर्णय लेता हूं ।
(8) वर्षों से मैं आइसक्रीम और ठंडी चीजें नहीं खाता था पर अब (57 साल) बड़ी रूचि से ठंडी वस्तुएं उचित मात्रा में खा-पी लेता हूँ बिना कोई परेशानी ।
(9) मैं कबड्डी, वॉलीबोल आदि अन्य खेल भी खेलता हूँ वो भी अत्यंत स्फूर्ति के साथ और वो भी 57 वर्ष की आयु में ।

* क्रिया योग की दीक्षा तब मिलती है जब आप योगदा सत्संग सोसायटी / Self reliazation Fellowship (Foreign Country में) के सदस्य बनते हैं और उनके Step-1 और Step-2 पास करने से ।

<u>चुटकुला</u>

मोहन (रामू से)- यार तुम्हारी पत्नी की मौत का बड़ा अफसोस है। वैसे हुआ क्या था?

रामू (मोहन से)- गोली लगी थी माथे में।

मोहन- शुक्र कर ऊपर वाले का कि आंख बच गई।

<u>भारत में नक्सलवाद की समस्या</u>

संगीत कुमार मिश्रा
प्रशासन अधिकारी

प्रस्तावनाः

भारत में नक्सलवाद समस्या पश्चिम बंगाल प्रांत के नक्सलवादी क्षेत्र में सत्तर के दशक में शुरू हुआ । तब से अब तक यह देश के आधे से अधिक राज्यों में अपनी जड़ें फैला चुका है। नक्सलवाद की समस्या एक बहुत ही विकराल समस्या धारण कर चुकी है, और भारत सरकार एवं राज्य सरकारों के समक्ष आये दिन गंभीर चुनौतियाँ पेश कर रही है । इससे

प्रभावित राज्यों में आंध्रप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखंड, प. बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र मुख्य रूप से हैं । नक्सलियों ने कई जगहों पर समानान्तर सरकारे चला रखी हैं । ये हिंसा का रास्ता चुनते हैं एवं सरकारी सम्पत्तियों को भी नुकसान पहुँचाते हैं । छत्तीसगढ़ के बस्तर जिला के अंतर्गत दंतेवाड़ा इनका प्रमुख ठिकाना है । नक्सली मुख्य रूप से भीषण जंगलों, पहाड़ों से अपने क्रिया-कलाप को अंजाम दे रहे हैं । इनके द्वारा प्रभावित क्षेत्र "लाल" क्षेत्र कहलाते हैं ।

कारणः

वास्तव में नक्सलवाद की समस्या सामाजिक शोषण, भूमि का असमान वितरण, आदिवासी बहुल क्षेत्रों में बाहर से आने वालों द्वारा का अतिक्रमण इत्यादि के परिणाम है । नक्सलवादी एवं माओवादी मार्क्स के सिद्धांतों का अनुसरण करते हैं । इनका कहना है कि जो चीज मांगने से नहीं मिलती है उसे शक्ति अथवा हिंसा के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है । नक्सल की समस्या के जड़ में गरीबी का भी महत्वपूर्ण योगदान है । सरकार की नीतियाँ भी एक बेहतर कारक सिद्ध हुई है। कुछ पार्टियां जैसे पीपुल्स वार ग्रुप, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी/लेनीनवादी), पी.सी.पी.ए. इत्यादि नक्सली कामों में लिप्त पाए गए हैं ।

सन् 1925 में जब कानपुर में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की स्थापना हुई थी तो किसी ने सोचा भी नहीं था कि ये नक्सली गतिविधियों में शामिल हो जाएंगें ।

हालांकि उस समय में अंग्रेजों ने इनकी गतिविधियों पर प्रतिबंध जरूर लगाए थे । नक्सलवाद की समस्या से अब तक कई निरीह लोगों की जाने गई हैं । एक अध्ययन के अनुसार 1980 से अब तक तकरीबन 11458 पुलिसवाले असमय नक्सलियों के शिकार हो गए । नक्सली लोग प्रभावित क्षेत्रों में उद्योग-कारखानों आदि से वसूली भी करते रहे हैं ।

पिछले वर्ष अक्तूबर में छत्तीसगढ के दंतेवाड़ा में नक्सलियों ने केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की कम्पनियों/वाहनों को बारूदी सुरंग से उडा दिया था । जिसमें 85 जवान शहीद हो गए । पश्चिम बंगाल के नक्सल प्रभावित क्षेत्र में डाउन गुवाहाटी राजधानी एक्सप्रेस को 04 घंटे तक नक्सलियों ने अगवा कर लिया । पुलिस बलों को मारना और उनको अगवा करना आए दिनों होता रहता है । नक्सली लोग प्रभावित क्षेत्रों में पुलिस थानों एवं चौकियों पर हमला कर गोला-बारूद कारतूस छीन कर ले जाते हैं । पिछले दिनों लातेहार और बिहरा के रोहतास की घटना अभी इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

नक्सलियों का नेटवर्क पूरे देश में फैला हुआ है । गुप्तचर विभाग के अनुसार इनका फंडिग चीन एवं नेपाल से होता है । कुछ राजनीतिक पार्टियां भी अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इनका समर्थन करते हैं । बंगाल के लालगढ़ की घटना के बाद जब पुलिस बलों ने एक नक्सली नेता चक्रधर महतो को गिरफ्तार किया तो एक राजनीतिक पार्टी ने इसका विरोध करना शुरू कर दिया क्योंकि वहाँ पर अभी चुनाव होना है और उन्हें अपने वोट बैंक में तब्दील करना है।

दंतेवाडा की घटना के बाद सभी राज्यों (नक्सल प्रभावित) के पुलिस महानिरीक्षक की बैठक को संबोधित करते हुए गृह मंत्री ने नक्सलवाद की समस्या को जड़ से उखाड़ने का एलान किया था और आर-पार की लडाई लड़ने का निर्णय लिया था ।

नक्सली प्रभावित राज्यों में 100 से अधिक अर्धसैनिक बलों की टुकडियों को तैनात किया गया है । जिन्हें गुरिल्ला युद्ध, जंगली छापामार युद्ध का प्रशिक्षण दिया गया। इसके अलावा कीवेरा फोर्स को भी तैनात किया गया है जो सी.आर.पी.एफ. इत्यादि बलों से है । इसरो भी जंगलों एवं दुरह क्षेत्रों की तस्वीरें, इनके ठिकानों का पता लगाकर इन बलों को सी.आई.एस.एफ. के जरिये सूचना प्रदान करते हैं । भारतीय वायु सेना के एम.आई. हेलिकॉप्टर द्वारा भी नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में निगरानी रखी जाती है । इन सभी उपायों के बावजूद इनकी गतिविधियों पर अंकुश नहीं लगाया जा सका है ।

सरकार के पास नक्सलियों का दमन करने के लिए सेना के उपयोग का मामला अभी विचाराधीन है क्योंकि सेना इसके लिए सहमत नहीं है । सरकार ने नक्सलियों के सामने बातचीत का भी रास्ता खोल रखा है फिर भी नक्सली समझने को तैयार नहीं है । सरकार सशस्त्र आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को पुर्नवास की सुविधा उपलब्ध करा रही है । इनके बावजूद नक्सली सुनने को तैयार नहीं है एवं आये दिन अपने साथियों को छुड़ाने के लिए पुलिस/सरकारी कर्मचारी का अपहरण कर रहे हैं । निस्संदेह ही यह पूरे देश के लिए चिंता का विषय है क्योंकि भारत एक लोकतांत्रिक देश है जहां सभी नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त है और संविधान के अंदर रहकर सभी समस्याओं का निदान संभव है ।

नक्सली समस्या से छुटकारा पाने के लिए निम्नलिखित सुझाव हैः

1. भूमि का समान वितरण हो ।
2. स्थानीय नौकरी में स्थानीय लोगों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए ।
3. पिछड़े क्षेत्रों का सर्वांगीण विकास किया जाए ।

4. कृषि, योग्य भूमि का बलात अधिग्रहण न किया जाए जैसा बंगाल के सिंगुर में किया गया ।
5. सरकार की योजनाओं का कार्यान्वयन पूरी ईमानदारी से प्रभावित क्षेत्रों में किया जाए।
6. लोगों में जागरूकता फैलाई जाय कि हिंसा से किसी समस्या का निदान नहीं हो सकता ।
7. आदिवासियों के लिए अच्छी उपज का बाजार में अच्छा मूल्य मिले ।
8. शिक्षा एवं स्वास्थ्य व्यवस्था को और मजबूत किया जाए जिससे साक्षरता और जागरूकता बढ़ेगी ।
9. "स्वयं सहायता" समूहों का गठन कर रोजगार एवं कुटीर उद्योगों के लिए सरकारी बैंकों से कम ऋण पर रोजगार स्थापित करने के लिए मदद मिले।

उपरोक्त सभी सुझावों को यदि ईमानदारीपूर्वक लागू किया जाए तो यह समस्या निश्चित रूप से हल हो जाएगी । जरूरत है एक सकारात्मक माहौल/वातावरण पैदा करने की क्योंकि नक्सली भी हमारे अपने ही लोग हैं वे समाज से अलग हो गए हैं । सरकार अपनी योजनाओं से इनको समाज की मुख्य धारा में वापस ला सकते हैं ।

अंत में हम आशा करते हैं कि वह दिन दूर नहीं होगा जब हमारा समाज एवं सरकार मिलकर नक्सलवाद को जड़ से उखाड़ फैंकने में कामयाब होगा ।

कुछ सीखने योग्य

जसोता एम. सुहंदा
वरिष्ठ सहायक

1. पानी के पास सब कुछ है पर छुआछूत की बीमारी नहीं है । पानी तो निर्मल है सबको ठंडक देता है ।

2. धरती माता के पास सब कुछ है । चीज़ की उत्पत्ति धरती से होती है । गरीब-साहुकार, ऊँच-नीच जाति के लोग धरती पर ही निवास करते हैं । सभी को अपने में समाते हुए भी उस में भेदभाव नहीं है ।
3. धर्म कैसा भी हो पर सब को समान ही करता है ।
4. अजब की बात है कुत्ते में इतना संयम है कि अपनी गली के कुत्ते से नहीं झगड़ेगा पर जैसे ही दूसरी गली का कुत्ता आया तो सब कुत्ते मिलकर उसको भगा देते हैं । इन्सान में इतना भी संयम नहीं है, वो अपने ही लोगों से दुःखी होता है और राग द्वेष करता है ।

   हाय ! नाम मनुष्य, पर हरकतें कितनी करता है ।
5. विवेकानंद जी से किसी ने पूछा प्यार का मतलब क्या होता है अर्थात प्यार किस तरह से किया जाए ?

   विवेकानंद के पास एक चप्पू पड़ा था वो उन्होंने उठाया । धार वाली जगह खुद ने पकड़ी और हेन्डल वाली जगह उसको दी और पूछा पता चला ? पहला आदमी हैरानी में पड गया और पूछा क्या कहना चाहते हैं ?

विवेकानंद जी ने बताया खुद कष्ट सहन करके दूसरे को सुख देना यही प्यार होता है।

<u>संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के अधीनस्थ कार्यालय दिल्ली भू केंद्र, नई दिल्ली का दिनांक 14 जून, 2011 को संपन्न राजभाषा संबंधी निरीक्षण</u>

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 14 जून, 2011 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के अधीनस्थ कार्यालय दिल्ली भू केंद्र का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया ।

निरीक्षण के प्रारंभ में डॉ. रं.रा. नवगुंद, निदेशक, सैक ने समिति का स्वागत किया तथा दिल्ली भू केंद्र द्वारा संपन्न किए जा रहे विभिन्न क्रियाकलापों एवं अंतरिक्ष उपयोग केंद्र के विभिन्न क्रियाकलापों का संक्षिप्त परिचय पॉवर पाइंट प्रस्तुतीकरण द्वारा समिति को दिया । निरीक्षण के दौरान संसदीय समिति के सदस्यों द्वारा दिल्ली भू केंद्र में राजभाषा हिन्दी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए कई उपयोगी सुझाव दिए गए।

<u>संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद का दिनांक 29 सितंबर, 2011 को संपन्न राजभाषा संबंधी निरीक्षण</u>

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा दिनांक 29 सितंबर, 2011 को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, अहमदाबाद का राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया गया । निरीक्षण के दौरान समिति के सदस्यों द्वारा अंतरिक्ष उपयोग केंद्र एवं इसरो के अन्य कार्यालयों द्वारा हिन्दी कार्यान्वयन को बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की गई। डॉ. रं.रा. नवलगुंद, निदेशक, सैक ने समिति के माननीय सदस्यों को अंतरिक्ष उपयोग केंद्र द्वारा प्रकाशित मूल एटलस का हिन्दी संस्करण भेंट किया गया ।

निरीक्षण स्थल पर अंतरिक्ष विभाग एवं अंतरिक्ष उपयोग केंद्र द्वारा प्रकाशित विभिन्न प्रकाशनों एवं हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए आयोजित किए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों से संबंधित एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई । इस प्रदर्शनी में अंतरिक्ष विभाग के विभिन्न मॉडल भी प्रदर्शित किए गए । समिति के सदस्यों ने इन प्रकाशनों एवं मॉडलों का अवलोकन कर अंतरिक्ष उपयोग केंद्र द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए आयोजित किए गए विभिन्न कार्यक्रमों एवं अंतरिक्ष विभाग के विभिन्न क्रिया-कलापों की सराहना की ।

तकनीकी हिंदी सेमिनार - 2011 की झलकियां

दाहोद में आयोजित भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान कार्यक्रम की झलकियां

हिंदी कार्यशाला

हिंदी माह - 2010 की झलकियां